तीसरा वर्ष

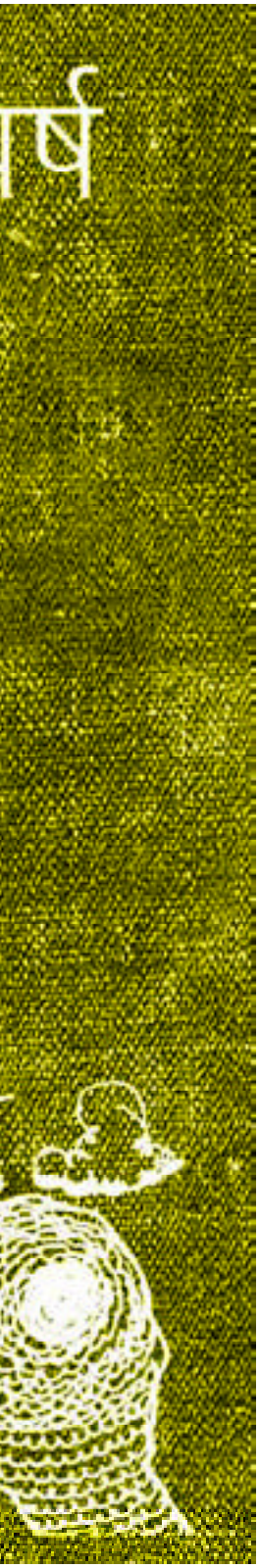

7

मैं अपना दर्शन लागू करने की कोशिश करती रही

गुरुवार, 18 अगस्त 1938

ग्रीष्म शाला से घर लौट एक बार फिर से जम चुकी हूँ। अब जाकर कुछ खाली समय और एक शान्त कमरा उपलब्ध हुआ है, जिससे मैं अपने इन विचारों को शब्दों में बाँध सकी हूँ कि हमारे समाज को किस दिशा में बढ़ना चाहिए, इस समाज में स्कूल का क्या स्थान है, और जिन बच्चों को हम पढ़ाते हैं उनके बारे में हमारा क्या सोच है, वे कैसे हैं, कैसे सीखते हैं, और उनके प्रति स्कूल का क्या दायित्व है।

मुझे लगता है कि सिखाते समय हमें कुछ सामाजिक लक्ष्य अपने समक्ष रखने चाहिए, और ये लक्ष्य इस विचार से उपजने चाहिए कि हम किस प्रकार का समाज चाहते हैं। हम शिक्षकों के मन में एक चित्र होना चाहिए, जो हमारे अनुभवों के बढ़ने के साथ-साथ विस्तृत होता चले, कि आखिर लोगों के लिए जीवन जीने का एक अच्छा तरीका क्या है। हमें अपने बच्चों का अध्ययन इन मूल्यों के प्रकाश में करना चाहिए ताकि यह समझ आए कि उनके जीवन किस प्रकार सुधारे जा सकते हैं और इन वांछनीय दिशाओं में विकसित हो सकते हैं। जैसे-जैसे यह स्पष्ट होने लगे कि हमारे बच्चों को किन चीज़ों की आवश्यकता है, हमें ऐसा कार्यक्रम रचना चाहिए जिससे उन ज़रूरतों की पूर्ति हो।

शुक्रवार, 19 अगस्त

आज मैं बच्चों के घरों में गई ताकि फिर उनसे मिल लूँ और उनके द्वारा भेजे

गए अनेक सुन्दर पत्रों के लिए धन्यवाद भी दे डालूँ। थॉमस ने गर्मियों में घर के बड़े कमरे के दरवाज़े को खुरचा, उसकी वार्निश को हटाया, और उसे फिर से रंग डाला। जब एण्ड्रयूस् परिवार के यहाँ पहुँची तो पाया कि लड़कियाँ अपनी मेज़-कुर्सियों को रंग रही थीं। श्री जोन्स मार्था और रैल्फ को सर्कस व चिड़ियाघर दिखाने ले गए थे, और इतवार को घुमाने भी। हिल परिवार समुद्र किनारे और न्यू यॉर्क घूमने गया था। मान व हिल लड़कों ने अपना काफी समय दुकान-दुकान और सर्कस-सर्कस खेलने में बिताया था। सामेटिस बच्चों ने दो फिल्में, "हूसियर स्कूलबॉय" और "किडनैप्ड" (अपहृत) देखीं थीं। वे नक्षत्रशाला और प्राकृतिक इतिहास का अजायबघर भी देखने गए थे। लगभग सभी बच्चों को अपनी रुचियों के अनुसार कुछ करने का समय मिला था। मनोरंजन की इन तमाम गतिविधियों में स्कूल का प्रभाव साफ-साफ नज़र आता है! नए वर्ष के लिए अधिकांश संकेत शुभ हैं।

गुरुवार, शुक्रवार व शनिवार, 25, 26 व 27 अगस्त

सभी बड़े लड़के इन तीनों दिन स्कूल में मिले ताकि वे उन अलमारियों को बना सकें जिनकी हमने पिछले बसन्त सत्र के समापन से पहले योजना बनाई थी। रैल्फ भी आया, यद्यपि वह इस वर्ष हाई स्कूल जाएगा और अलमारियों का लाभ खुद नहीं उठा पाएगा। उसका दृष्टिकोण कितना बदल गया है। उसका यह रवैया पिछले साल के शुरू में उसके रवैये से कितना भिन्न है जब उसने नन्हों के लिए खेलघर बनाने में मदद करने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि वह उसमें नहीं खेलने वाला था।

लकड़ी के आने का इन्तज़ार करते समय हमने अलमारियों के आकार तय किए। आठों बड़े लड़के तीन समूहों में बँट गए। एक समूह को पुस्तकालय के शेल्फ बनाने थे, दूसरे को संग्रहालय के, और आखिरी समूह को खिलौनों की अलमारी। हरेक समूह ने अपनी योजना के हिसाब से लकड़ी नापी, उसे काटा, शेल्फ बनाए और उन्हें दीवार के साथ खड़ा किया, रेगमाल से घिस फट्टों को सपाट किया और उन्हें रँगा।

जब हम इस सब में जुटे थे, मुहल्ले के कई पुरुष हमारा काम देखने रुके। उनका कहना था कि लड़कों का काम इतना बढ़िया था कि वे हैरान थे। लड़कों को

अपने ऊपर फख्र है और उन्हें लगता है कि ये अलमारियाँ और शेल्फ हमारे कक्ष के आकर्षण और कुशलता में इज़ाफा कर रहे हैं।

शुक्रवार व मंगलवार, 2 व 6 सितम्बर

बड़ी लड़कियाँ स्कूल प्रारम्भ होने से पहले सफाई करने व कक्ष को तैयार करने में मदद करने आईं।

बुधवार, 7 सितम्बर

औपचारिक रूप से आज स्कूल खुला है यद्यपि अधिकांश बच्चे पहले ही आने लगे थे। इस वर्ष इकत्तीस बच्चे हैं। शुरुआत करने वाले क्लैरेंस कार्टराइट और चार्ल्स विलिस हैं। बर्था श्मिट शहर से आई नई लड़की है और वह प्राथमिक समूह में शामिल होगी। सैली लेनिक भी प्राथमिक समूह में होगी। वह भी शहर से है। उसके माता-पिता कस्बे की किसी जायदाद की देखभाल करने आए हैं। सैली थॉमस की चचेरी बहन है।

आज दोपहर जब बच्चे आराम कर रहे थे तो मैंने उन्हें फर्डीनैंड नामक साँड की कहानी पढ़कर सुनाई। बच्चों को कहानी बेहद अच्छी लगी और उन्हें लगा कि कठपुतली प्रदर्शन के लिए यह बढ़िया रहेगी। एल्बर्ट का मानना था कि कहानी ज़रा छोटी है। वॉरेन जानना चाहता था कि हम इस साल एक बड़ी कहानी के बदले चार-पाँच छोटी कहानियाँ क्यों नहीं प्रस्तुत कर सकते हैं।

हमने आज काफी समय मैदान से कागज़, टूटी शाखाएँ और पिकनिक मनाने आए लोगों द्वारा छोड़े गए खाली डिब्बों को साफ करने में बिताया।

गुरुवार, 8 सितम्बर

आज सुबह नियोजन के पीरियड में मैंने बच्चों का ध्यान स्कूल के पिछवाड़े घास-फूस के टुकड़े की ओर आकर्षित किया और सुझाव दिया कि अगर हम उसकी सफाई कर दें और उसे लॉन में बदल दें तो शाला भवन बेहतर दिखेगा। जब एलेक्स और गस छोटे बच्चों के साथ काम कर रहे थे और एण्ड्रयू व एडवर्ड खेलघर में छाया करने के लिए लगाई कपड़े की छतरी की मरम्मत कर रहे थे, हम सब स्कूल के पिछवाड़े गए और हमने खरपतवार हटा दी। लड़कियों ने अपने शौचालय के इर्द-गिर्द से घास-फूस हटाई और लड़कों ने अपने पेशाबघर

के आसपास सफाई की। काम करते-करते किसी ने सुझाया कि इसे एक स्पर्धा में बदलकर देखा जाए कि लड़कियाँ बेहतर काम करती हैं या लड़के।

देखते ही देखते दस बज गए और बच्चे अपने-अपने समूहों में खेलने की तैयारी करने लगे। बच्चे अब मानकर चलते हैं कि वे साथ-साथ खेलेंगे। हेनरी ने आज मुझे बताया कि उसे अब तक वर्णमाला नहीं आती है, जो दरअसल उसे सीख लेनी चाहिए थी। कुछ दूसरे बच्चों ने कहा कि जब वे शब्दकोश देखने लगते हैं तो उन्हें देर तक सोचना पड़ता है कि "पी" वर्णमाला के पूर्वार्द्ध में आता है या उत्तरार्द्ध में और "टी" अन्तिम अक्षरों के कितना आसपास है, इत्यादि। वर्तनी के पीरियड में हेनरी वर्णमाला को पक्की तरह याद करने बैठा, जबकि शेष बच्चों ने शब्दकोश से अर्थ तलाशने का काम किया। बिचले समूह के बच्चों ने शब्दकोश में कुछ शब्द तलाशे जो मैंने बोर्ड पर लिखे थे। उन्होंने उस पृष्ठ संख्या को दर्ज किया जिस पर उन्हें वे शब्द मिले। उन्होंने शब्दों को वर्णक्रम में भी लिखा। बड़े बच्चों को ऐसे अभ्यास की दरकार नहीं थी, अतः उन्होंने कुछ मुख्य या मार्गदर्शक शब्दों के सहारे शब्दकोश में शब्द तलाशने का काम किया। उन्होंने शब्दार्थ के अलावा उन तमाम बातों को भी दर्ज किया जो शब्दकोश शब्द के बारे में हमें बताता है।

पिछली गर्मियों के दौरान बच्चे खिड़कियों में लगे काठ के बक्सों को घर ले गए थे ताकि उनमें उगे फूलदार पौधों की देखभाल की जा सके। आज स्कूल के बाद मैं उन्हें वापस लाई और उन्हें यथास्थान लगाया। बच्चों ने उनकी बढ़िया देखभाल की है और पिट्यूनिया के फूल बेहद सुन्दर हैं।

शुक्रवार, 9 सितम्बर

आज जब हम खरपतवार से भरे पिछवाड़े के हिस्से में सफाई करने गए तो लड़कियों ने अपनी प्रगति की तुलना लड़कों के काम से की और उन्होंने खुद को पीछे पाया। डॉरिस ने कहा, "हमारा काम तेज़ी से नहीं बढ़ पाता है क्योंकि काँटे हमारी खुली टाँगों को छील देते हैं। लड़के लम्बी पतलून पहनते हैं, सो उन्हें परेशानी नहीं होती।" थॉमस ने सुझाया कि अगर लड़कियाँ चाहें तो लड़के काँटों को साफ कर देंगे। डॉरिस ने कहा कि इसके बदले में लड़कियाँ लड़कों के उस हिस्से की खरपतवार उखाड़ देंगी जहाँ काँटे नहीं हैं। मे बोली, "हम एक-

दूसरे की मदद करेंगे तो प्रतियोगिता कैसे होगी भला?" "क्या फर्क पड़ता है," थॉमस ने ज़ोर से कहा, "काम तो बेहतर होगा ना।" बच्चों ने आज एक बेहद ज़रूरी पाठ सीख लिया है।

खेल के पीरियड के बाद नन्हे बच्चों और मैंने खेलघर में खेलने की योजना बनाई। पाँच मिनट में हमने माँ-पिता, बच्चे, शिक्षक, और सम्बन्धियों को चुन लिया, और एक खेल कार्यक्रम बना डाला। मे उनके साथ बाहर चली गई ताकि ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध रहे। वह उनके साथ चुप रहती है और कोमल बर्ताव करती है।

पिछले दो वर्षों से हम कोशिश करते आ रहे हैं कि हमारे मैदान के गड्ढों को भरने में कोई मदद कर दे, खासकर शाला भवन के सामने सीढ़ीदार चबूतरा बनाने में, ताकि उस पर लॉन बनाया जा सके। हम सफल नहीं हो सके हैं क्योंकि लगता है कि यह काम किसी के कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं है। बच्चों के माता-पिता बेहद व्यस्त रहते हैं, सो वे भी मदद नहीं कर सके हैं। आज सुबह हमें सूझा कि हम अपने कस्बे के डब्ल्यू.पी.ए. (WPA) यानी निर्माण प्रगति प्रशासन (Works Progress Administration) के प्रमुख को पत्र लिखें और उनसे मदद पाने के सुझाव माँगें।

आज हमारी सुन्दर, नई, जिल्द बँधी कॉपियाँ आ पहुँचीं। पिछले साल सत्र के अन्त तक इतनी कॉपियाँ भर गई थीं कि बच्चों ने इच्छा ज़ाहिर की कि वे एक ही मोटी सजिल्द कॉपी रखें, जिसके अलग-अलग हिस्से कर उसी में काम करें, जैसे मैं करती हूँ।

बुधवार, 14 सितम्बर

प्राथमिक समूह के आधे बच्चे खेलघर में खेल रहे थे और शेष आधे चित्र-फलकों पर बड़े चित्र बनाने में व्यस्त रहे। कुछ समय बाद इन समूहों ने अपनी गतिविधियों की अदला-बदली कर ली। सैली को अपने चित्र में बेहद आनन्द आया। उसने अपनी नीग्रो गुड़िया का चित्र बनाया। सैली ने हमें बताया, "इसकी दो चोटियाँ हैं और मैं इसे 'सनशाइन' कहती हूँ। मेरे पास एक बत्तख भी है। वह सीना तान लेती है और सोचती है कि वह बॉस है।" बच्चों ने उसकी गुड़िया देखने की माँग की, जिसे वह कल लाएगी।

एरिक छोटे बच्चों के साथ खेलना पसन्द नहीं करता। वह उन्हें नोचता है और उनकी बाँहें मरोड़ता है। चार्ल्स के प्रति वह खास तौर से बेरहम है। पहले मैं सोचती थी कि ज़रूर दूसरे बच्चे एरिक को छेड़ते होंगे, पर आज मैंने ध्यान से देखा और पाया कि मेरा कयास गलत था। एरिक पर उसकी दो बड़ी बहनें हावी रहती हैं। शायद यह कारण हो कि वह अपने से छोटों पर गुस्सा निकालता है। मुझे पक्का पता नहीं। अगर यह सच है तो उसे अपना गुस्सा निकालने का कोई ऐसा रास्ता चाहिए जो दूसरों को नुकसान न पहुँचाए।

साढ़े ग्यारह बजे डॉरिस नन्हों को बाहर कहानी सुनाने ले गई। उस वक्त बड़े बच्चे पाण्डुलिपि लेखन सीख रहे थे। वे अपनी मौलिक कविताओं का संकलन करना चाहते हैं। मैंने उन्हें मोत्ज़ार्ट की जीवन कथा पढ़कर सुनाई और जानना चाहा कि अक्तूबर के मनोरंजन कार्यक्रम के लिए क्या वे उसका नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत करना चाहेंगे। एल्बर्ट का कहना था कि वे पहले अन्य संगीतकारों की जीवनियाँ सुनना चाहेंगे।

गुरुवार, 15 सितम्बर

मैंने बच्चों को बाख और हेडन की जीवन कथाएँ सुनाईं। उन्हें मोत्ज़ार्ट की कथा सबसे अच्छी लगती है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने सैली की गुड़िया पर बातचीत की, और हमने एक चार्ट कथा बनाई। सभी बच्चों ने इस कहानी को पढ़ना सीखा। जब मैं समूह चार और पाँच के साथ पठन का अभ्यास कर रही थी, नन्हे बच्चे अपने खेलघर में खेलने गए।

साढ़े ग्यारह बजे रुककर हमने "बयार में वर्षा की सी ध्वनि है" नामक कविता सीखी। हमने कविता के अर्थ पर बात की और तब उस अर्थ को सम्प्रेषित करते हुए कविता पढ़ने की कोशिश की। वॉरेन ने टिप्पणी की कि यह कविता पिछले सप्ताह की कविता से अलग है क्योंकि यह तूफानी और उदास है। हेनरी का कहना था कि यह "चिन्ताओं से भरी है।"

छोटे बच्चे इस साल सीखने को लेकर बड़े उत्साहित हैं। अक्सर उनमें से कोई खेलना बन्द कर बैठ जाता है और अपना नाम लिखने की कोशिश करता है।

या फिर हम उन्हें पुस्तकालय के कोने में बैठे सचित्र किताबों के पन्ने पलटते देखते हैं। चार्ल्स रोज़ पूछता है, "मैं कब पढ़ सकूँगा?"

शुक्रवार, 16 सितम्बर

श्री राइली ने आज हमारे पत्र का जवाब भेजा जिसमें उन्होंने कहा कि स्कूल मैदान की भराई के लिए एक वैध परियोजना बनाने के लिए हमें शिक्षा बोर्ड को कहना होगा।

सोमवार, 19 सितम्बर

स्वास्थ्य सम्बन्धी कक्षा में हमने गत वर्ष अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जो कुछ किया था, उसे संक्षेप में दोहराया। हम एक सूची बनाएँगे जिसमें उन सभी बातों को दर्ज कर लेंगे जिनका हमें इस वर्ष खास ख्याल रखना है और फिर एक-एक कर उन पर ध्यान देंगे जब तक कुछ चीज़ों को करने की नई और बेहतर आदतें न बन जाएँ। यह कर पाने के लिए हम नए तरीकों के कारण समझेंगे और उन पर विचार-विमर्श करेंगे।

आज मैंने गौर किया कि यद्यपि बच्चे लगातार काम करते रहे पर उनका काम समय पर पूरा नहीं हो पाया। ज़्यादा तहकीकात करने पर पता चला कि वे उन कामों को भी करते रहे थे जिनको ज़रा बाद में करना था। वे उस काम को पहले करना पसन्द करते हैं जो उन्हें अच्छा लगता है। कल मैं उन्हें उनके अध्ययन की योजना बनाने में मदद करूँगी। लगता है इस विषय पर हर साल उनसे बातचीत करना ज़रूरी है।

मंगलवार, 20 सितम्बर

कुछ समय हमने समय-सारणी की चर्चा करने और उसे बनाने में लगाया। हरेक व्यक्ति ने अपने हिसाब से स्वयं के अनुकूल सारणी बनाई है। इसे वे अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेंगे ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे देख सकें।

सोमवार, 26 सितम्बर

बड़े बच्चों को मैंने फल उद्योग से परिचित करवाया। हमारी काउंटी में सेब उत्पादन महत्वपूर्ण व्यवसाय बनता जा रहा है। क्योंकि हमारे कस्बे में सेब का

बागान भी है, मुझे लगा कि हम इस संसाधन का उपयोग कर उन चीज़ों को समझ सकेंगे जो बच्चे दूध उत्पादन के अध्ययन के दौरान समझ नहीं पाए थे। समुदाय की वित्तीय समस्याओं में से कुछ का समाधान शायद सेब उत्पादन को बढ़ाकर किया जा सकता है।

हमने मार्था की दादी के बागान की चर्चा की और इस विषय पर भी कि सेब का उत्पादन कैसे एक विशिष्ट उद्योग का रूप ले रहा है। हमने भोजन में फलों के महत्व पर बात की, और कि पहले फलों की देखभाल कैसे की जाती थी और आज हम उनकी देखभाल कैसे करते हैं। मैंने पूछा कि क्या हमें पूरे साल ताज़ा फल मिल सकते हैं? वॉरेन ने कहा कि दुकानों में तो वे उपलब्ध होते हैं, पर सर्दियों में उनकी कीमत इतनी अधिक होती है कि उन्हें खरीदना कई बार सम्भव नहीं होता है। मैंने पूछा कि क्या डिब्बाबन्द फल भी उतने ही पौष्टिक होते हैं। किसी को कुछ पता नहीं था। सोफिया का कहना था कि पिछले साल सन्तरे बड़े सस्ते थे, पर इसका कोई कारण वह नहीं बता सकी। वॉरेन को इस बात में असंगति नज़र आई क्योंकि सन्तरे काफी दूर से यात्रा करके हमारे पास पहुँचते हैं। उसने यह भी पढ़ रखा था कि सन्तरों को हाथों से एक-एक कर तोड़ना पड़ता है, जिससे समय ज़्यादा लगता है। मैंने पूछा, "सन्तरों की एक पेटी अगर पचास सेंट में बिकती है तो क्या उन्हें तोड़ने वालों को काफी मज़दूरी मिलती होगी?" इस बात की गहराई में हम नहीं गए। आज मेरी कोशिश इतनी भर थी कि फल उद्योग के कई पहलुओं को हम खोल दें। हमने फलों की पौष्टिकता, फल उद्योग के विकास, कीमत, मज़दूरी और फलों की कीमत के बीच रिश्ता, ताज़ा और डिब्बाबन्द फलों की पौष्टिकता, फलों को सही तरह से डिब्बाबन्द करना और फलों की देख-रेख आदि पहलुओं को छुआ।

मंगलवार, 27 सितम्बर

गत कुछ दिनों से बच्चे यूरोपीय संकट की खबरें लाते रहे हैं, जो उन्हें अखबारों या रेडियो से मिलती हैं। हम हर सुबह पन्द्रह-बीस मिनट इन पर बातचीत करते हैं, और इससे फायदा होता है। सबसे बड़े बच्चों के समूह ने फल अध्ययन से सम्बन्धित पुस्तकों की सूची बनाई है। समूह के बड़े बच्चे स्वयं काम करने में जुट गए हैं, क्योंकि वे गत वर्ष यह करना सीख चुके हैं। जो बच्चे कुछ छोटे हैं, उनकी मैंने मदद की।

मंगलवार, 4 अक्तूबर

आज सुबह बड़े बच्चों के साथ ज़्यादा समय बिताना पड़ा ताकि उन्हें बता सकूँ कि वे अपने पढ़ाई के समय का बेहतर उपयोग कैसे कर सकते हैं।

दिन के अन्त में गणित करने के बदले एक समिति ने सहायक क्लब की विशेष बैठक बुलाई और थॉमस से त्यागपत्र चाहा। उनका कहना था कि वह अध्यक्ष बनने लायक नहीं है क्योंकि वह किसी की मदद ही नहीं करता। यह कई घटनाओं की लम्बी कड़ी का नतीजा है। थॉमस केवल तब खेलता है जब खेल उसे अपने अनुकूल लगता है। और जब वह खेलता भी है, तब उसके निर्णय न्यायपूर्ण नहीं होते। इसके अलावा, वह अध्ययन कक्ष में ऊँची आवाज़ में बोलता रहा है। एण्ड्रयू ने थॉमस से त्यागपत्र माँगने का प्रस्ताव रखा जिस पर सबने सहमति जताई। अपनी रोज़मर्रा की समस्याओं से निपटने की दिशा में बच्चों ने काफी प्रगति की है और वे विवेकवान निर्णय लेने में सक्षम हैं।

एक नई समस्या उभर रही है, जिससे सावधानी से निपटना होगा। इसे बच्चे बिना मदद स्वयं नहीं सुलझा सकेंगे। रूथ, डॉरिस, मेरी, मे और सोफिया पिछले साल में तेज़ी से परिपक्व हुई हैं। रूथ और मे काफी समय लड़कों के बारे में बातचीत करने में गुज़ारती हैं। दोपहर के समय खेलने के बदले ये लड़कियाँ नई-पुरानी फिल्मों की बातें करती हैं। उनका काम असावधानी और अकुशलता से किया गया होता है। मे मुझ पर आरोप लगा चुकी है कि मैंने उसके कागज़ खो दिए हैं, जो बाद में उसे अपनी ही एक किताब के बीच पड़े हुए मिले। लड़कियाँ तेज़ी से बढ़ रही हैं और विकसित हो रही हैं।

लगता है कि रूथ उनकी नेत्री है। मैं स्वयं को यह विश्वास कभी नहीं दिला पाई हूँ कि बच्चों को रोकना सही कदम है। जब रूथ पिछले साल प्रारम्भिक स्कूल के अन्तिम वर्ष की ओर बढ़ रही थी तो उसकी माँ को उसकी तेज़ प्रगति देख लगा था कि अगर उसे हाई स्कूल में अच्छी छात्रा बनाना हो तो उसे प्रारम्भिक शाला में एक साल और बिताना चाहिए। चूँकि रूथ भी अपनी माँ से सहमत थी, हमने यही किया। पर इस वर्ष मुझे पुख्ता तौर पर लग रहा है कि हमसे गलती हुई है। यद्यपि रूथ ने काफी सीखा है, पर उसे शारीरिक व भावनात्मक रूप से अपने हमउम्र बच्चों के साथ होना चाहिए।

शुक्रवार, 7 अक्तूबर

जब हम सेबों को बाज़ार पहुँचाने की बात कर रहे थे, मार्था ने बताया कि उसकी दादी अपने सेब श्री स्कॉट को बेचती हैं, जो काउंटी के अधिकांश सेब खरीद लेते हैं और तब आगे बेचते हैं। मैंने सुझाया कि हम श्री स्कॉट से मिलें और आज हमने उन सवालों की सूची बनाई जो उनसे पूछे जाने हैं।

बुधवार, 12 अक्तूबर

आज साढ़े ग्यारह बजे बड़े समूह के बच्चे श्री स्कॉट के फार्म की दिशा में निकले। श्री स्कॉट ने उन्हें फलों का बागान दिखाया। इमारतों में लौटने पर बच्चों ने सेब का रस निकालने, छानने, उसे ठण्डा रखने के यंत्रों को देखा। हमने उनका भण्डार भी देखा और वह कमरा भी जिसमें विभिन्न आकारों के सेब छाँटे और डिब्बों में बन्द किए जाते हैं। स्कॉट फार्म के बाद हम वैली झील के किनारे पिकनिक करने गए। थॉमस की टिप्पणी थी कि काम और मस्ती को साथ मिला लिया गया है। हमने कुछ देर गीत गाए, बेसबॉल खेली और तब, क्योंकि अँधेरा होने लगा था, हम घर की ओर लौट आए। यह आनन्ददायक व फलदायी दिन रहा।

गुरुवार, 13 अक्तूबर

मैं अपनी दैनन्दिनी में लिखी टिप्पणियाँ पढ़ रही थी और मुझे वे अपर्याप्त और मूल्यांकन में कमज़ोर लगीं। फल उद्योग का अध्ययन बच्चों के लिए वास्तविक चुनौतियाँ नहीं रख रहा, मैं किशोरियों के लिए कुछ भी सन्तोषजनक नहीं कर पा रही हूँ। पढ़ाने के अलावा मुझे हर सप्ताहान्त अपने कोर्स के लिए न्यू यॉर्क भी जाना पड़ता है। हालाँकि अभी साल शुरू ही हुआ है, मैं थकी-थकी हूँ और मेरी महत्वाकांक्षा भी क्षीण हो रही है। मैं अपनी ऊर्जा को सही दिशा नहीं दे पा रही हूँ।

शनिवार, 15 अक्तूबर

हमेशा की तरह जैसे निराशा व उदासी के दौर में होता है, मैं मिस एवरेट से मिलने गई। उनसे चर्चा करने से समस्याएँ खुद-ब-खुद छँटने लगती हैं। उनका कहना था कि मैं जो कोर्स पढ़ रही हूँ वह मुझे अधिक प्रभावी और कम बोझिल

लगेगा जब उसका रिश्ता मेरे काम के साथ होगा। हमने इस मसले पर कुछ विचार किया कि अध्ययन के लिए मैं किस समस्या को चुनूँ। हमने शुरुआत इस प्रश्न के साथ की कि "बच्चों के लिए आगे क्या हो?" उन्होंने समुदाय के कृषि के दौर का कुछ अध्ययन किया है। उन्होंने उन परिवर्तनों पर गौर किया है जो शुरुआत से अब तक स्थानीय समुदाय में आए हैं। ये बदलाव किन कारणों से आए यह प्रश्न कई बार उठा है, पर उसका सटीक उत्तर कभी नहीं मिला है। हमें लगा कि अगर बच्चे इन सवालों के जवाबों पर सोचें तो उन्हें फायदा होगा। इस तरह बदलती दुनिया की समझ उनमें पनपेगी, खासकर औद्योगिक क्रान्ति के कारण जो बदलाव आए उन्हें वे समझ सकेंगे।

किशोर बालिकाओं की स्वास्थ्य समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को सम्बोधित करने की सख्त ज़रूरत है।

हमें लगता है कि इन आवश्यकताओं की पूर्ति कपड़ा उद्योग के अध्ययन से की जा सकती है। इस अध्ययन की योजना बनाते समय बच्चे और मैं कुछ नई तकनीकों के साथ प्रयोग भी कर सकते हैं। मुझे इसमें और इससे सम्बन्धित उठने वाली समस्याओं के बारे में पाठ्यक्रम के अपने प्रोफेसर से मदद मिल सकती है। तब मुझे अपने पाठ्यक्रम के लिए जो पर्चा लिखना है वह बच्चों की परियोजना की कहानी और परियोजना के मूल्यांकन के विषय में लिखा जा सकता है।

मिस एवरेट का कहना था कि क्योंकि बच्चों की फल उद्योग में खास रुचि नहीं है, उसके अध्ययन को तेज़ी से समाप्त कर उसे एक यथासम्भव सन्तोषजनक निष्कर्ष तक ले जाना चाहिए। जिन चीज़ों को सिखाने की उम्मीद हमने फल उद्योग के अध्ययन से रखी थी, वे कपड़ा उद्योग के अध्ययन से भी सीखी जा सकती हैं।

सोमवार, 26 दिसम्बर

गत दो माह से मैं अपनी दैनन्दिनी नहीं लिख पाई हूँ क्योंकि बहुत सारे दूसरे कामों के बीच इसके लिए समय निकालना सम्भव ही नहीं रहा। पर आज इन दो महीनों के अनुभवों की जो छवि मेरे मन में है, उसे दर्ज कर लेना चाहती हूँ।

इस दौरान हमने जो किया:

1. सेब उद्योग का अध्ययन पूरा किया।
2. अखबार का पहला अंक निकाला।
3. मोत्ज़ार्ट के जीवन पर एक नाटक रचा और मंचित किया।
4. रेडियो पर गाया।
5. क्रिसमस मनोरंजन कार्यक्रम के लिए डिकन्स के उपन्यास *क्रिसमस कैरल* का मंचन किया।
6. पोलिश, स्वीडी, फ्रेंच, इतालवी, रूसी, हंगारी व जर्मन भाषाओं में कैरल सीखे व गाए।
7. कई उपयोगी क्रिसमस उपहार बनाए।

स्थितिः

अक्तूबर माह के अन्त में स्थिति में कुछ तनाव था, पर दिसम्बर के आते-आते तनाव गायब हो गया। मुझे यकीन है कि अधिकतर परेशानी इस वजह से थी कि मैं खुद थकी होने के कारण जो कुछ घट रहा था उसके प्रति संवेदनशील न रह पाई थी। विभिन्न क्लबों की बैठकों में मेरा नज़रिया झलकने लगा। बच्चे चिड़चिड़ाने लगे थे और एक-दूसरे में मीन-मेख निकालने लगे। तब नवम्बर में एक दिन मैंने रूथ को टोका क्योंकि वह बच्चों से तीखी आवाज़ में बोल रही थी। इस पर उसने कहा, "पर आप तो खुद हमसे ठीक ऐसे ही बोलती हैं।" मैं सकते में आ गई, पर मुझे तत्काल समझ आ गया कि हो क्या रहा था।

अगली क्लब बैठक में हमने इस समस्या पर खुली बातचीत की। हमने यह समझने की कोशिश की कि हम जैसा आचरण कर रहे हैं उसका कारण क्या है। हममें से कोई भी यह नहीं कह सका कि यह सब शुरू कैसे हुआ, पर एक कठोर शब्द की प्रतिक्रिया में दूसरे कठोर शब्दों ने हमारे पारस्परिक सहकार को छिन्न-भिन्न कर दिया था, और यों स्थिति बद से बदतर होती गई। बैठक के अन्त में मेरी ने प्रतिवेदन पुस्तिका में लिखा, "यह निर्णय लिया गया कि हम सब एक-दूसरे के प्रति अधिक सहृदयता से पेश आने की भरसक कोशिश करेंगे।"

बच्चों के विषय मेंः

रूथ, सोफिया, मे व डॉरिस ने ठेठ किशोरियों-सा आचरण करते हुए अपना गुट बना लिया है। उनकी पहली रुचि खुद में, अपने कपड़ों में और अपने बालों में है, और उसके बाद फिल्मों और फिल्मी सितारों में है। उनके लिए स्कूल महत्वपूर्ण नहीं है। अक्तूबर के अन्त में रूथ हर उस काम की आलोचना करने लगी जो मैं कर रही थी। उसने कमरे को व्यवस्थित करने में मदद करने से मना कर दिया। दो नवम्बर को हम बाहर घास पर बातचीत करने बैठे। हमारी बातचीत कुछ वैसी ही थी जैसी पहले साल रैल्फ और मेरे बीच हुई थी। प्रारम्भिक शाला के लड़के-लड़कियाँ वैसे युवा क्लब के सदस्य नहीं बन सकते, पर उस दिन मैंने अपवाद स्वरूप रूथ को उसकी सदस्यता का न्यौता दिया। दूसरे बच्चों को यह समझाना आसान था कि अगर रूथ ने साल भर प्रारम्भिक शाला में रुकना न चुना होता तो वह हाई स्कूल की छात्रा होती। इसके बाद अचानक रूथ में सारी व्यवस्थाएँ करने की इच्छा जगी। हमने उसे अल्पाहार और मोत्ज़ार्ट नाटक की पूरी ज़िम्मेदारियाँ लेने के अवसर दिए। उसने खुद एक समिति चुनी, अल्पाहार के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाई, हरेक समिति सदस्य को बताया कि उसे क्या लाना है, और बिना मेरी मदद के नाटक की संध्या को अल्पाहार की बिक्री की व्यवस्था की! जैसे ही रूथ ने सहयोग करना शुरू किया, दूसरी लड़कियों का आचरण भी बदल गया।

मे क्रमशः अपनी बहन जैसी बनती जा रही है और उसे भी स्कूल पसन्द नहीं आता है। मुझे इससे दुख होता है क्योंकि वह एक अच्छी व सन्तुलित बच्ची बन रही थी। मुझे लगता है कि मैंने समूह के शेष बच्चों की तुलना में उसकी कम मदद की है। उसकी बहन डॉरिस एक शान्त लड़की से शोर-शराबा करने वाली लड़की में बदल गई है। मैं दस नवम्बर को उनके घर गई तो उन्होंने बुझा-बुझा सा स्वागत किया। मुझे याद है कि जब उनकी माँ जीवित थीं तो वे बड़े उत्साह से मेरा स्वागत करती थीं।

मैंने उनकी एक बड़ी बहन एडना को, जो परिवार को सम्हाल रही है, बैठकों में जुड़ने का निमंत्रण दिया। वह एक युवा मण्डल की बैठक में आई भी और मैंने उसके साथ काफी समय बिताया और उसे स्कूल की योजनाओं के बारे में बताया। उनकी सबसे बड़ी बहन ब्लाँश, जो नर्स है, क्रिसमस की छुट्टियों में उनके पास आई और एडना उसे हमारे मनोरंजन कार्यक्रम में साथ लेती आई।

ब्लाँश कार्यक्रम के बाद मेरे पास आई और बोली कि बच्चों द्वारा इतना उम्दा प्रदर्शन उसने कभी देखा ही नहीं। ब्लाँश ने एडना को नया नज़रिया अपनाने में मदद की है।

सोफिया अपनी शेष तीन सहेलियों जितनी परिपक्व नहीं है, पर उनकी नकल करती है ताकि समूह में खप सके।

यह गुट मेरी को पसन्द नहीं करता, क्योंकि वह मुँहफट्ट है और उन्हें उनके बारे में अपनी राय साफ बता देती है। पर मेरी काफी अकेली पड़ जाती है, सो कभी-कभार वह उनके समूह में शामिल हो जाती है और यह नाटक करती है कि उनमें कोई मतभेद है ही नहीं और कि उसे मज़ा आ रहा है। सतही तौर पर यह सब चल जाता है पर मेरी ने मुझे बताया कि उसे यों नाटक करना पसन्द नहीं आता। पर लड़के मेरी को पसन्द करते हैं और उन्हें गुट की लड़कियाँ "बेवकूफ" लगती हैं। छोटे बच्चों में भी मेरी खासी लोकप्रिय है।

इस स्कूल में आने के बाद से थॉमस में काफी सुधार आया है। वह जब आया था तो दबा-सहमा सा लड़का था जो ज़रा-ज़रा सी बात पर अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार रहता था। पिछले साल उसने समूह के सभी लड़कों, खासकर रैल्फ से भिड़ने की पेशकश की थी। इस साल भी वह यदा-कदा भड़कता है, पर ऐसी घटनाएँ काफी कम हो गई हैं। वह समूह से तालमेल बैठाने लगा है और उसमें योगदान करने लगा है। गत अक्तूबर बच्चों ने थॉमस को उसके पद से हटा दिया था, पर नवम्बर में उसे फिर से मौका देने के लिए अध्यक्ष के रूप में चुना। थॉमस ने भी पूरी कोशिश की और दिसम्बर में फिर से चुना गया।

दिसम्बर में कॉलेज का एक छात्र स्कूल देखने आया। वह हमारे काम का अवलोकन करने कई बार आएगा। जब थॉमस ने यह सुना तो उसे लड़कों के शौचालय में हाल में लिखी गई अश्लील इबारतों से शर्म आई। मुहल्ले के बाहर के कुछ बड़े लड़कों ने यह काम किया है। उसने अपनी टोली को एकजुट किया, इबारतों को खुरच दिया, और इक्कीस सेंट इकट्ठे कर मुझे दिए ताकि मैं उन्हें रंग ला दूँ और वे पुताई कर सकें।

हेनरी को हमेशा चिन्ता रहती है कि वह कोई छोटी-मोटी गलती कर डालेगा। वह घड़ी देखता रहता है क्योंकि उसे डर रहता है कि वह समय पर काम खत्म नहीं कर पाएगा। वह इतनी धीमी गति से काम करता है कि अक्सर उसके पास दूसरी गतिविधियों का मज़ा लेने का समय ही नहीं बचता। वह चाहता है कि समूह उसे स्वीकार ले। इस पतझड़ में एक दिन खाने के पीरियड में उसे लड़कों ने छेड़ना शुरू किया तो वह अपनी माँ का दिया ढेर सा खाना पूरा नहीं खा सका। वह यह नहीं चाहता था कि इस बारे में उसकी माँ मुझसे कुछ कहे। उसे डर था कि ऐसा करने पर लड़के उसे नापसन्द करने लगेंगे। श्रीमती मान ने हेनरी की मौजूदगी में मुझसे बात की। मैंने हेनरी से कहा कि लड़के उसे पसन्द करते हैं, और अगर वह साहस दिखाए तो वे नाराज़ नहीं होंगे बल्कि उसकी कद्र करेंगे। अगली क्लब बैठक में हेनरी ने मामला उठाया। उस पर चर्चा हुई और मामला सलट गया। श्रीमती मान और उनकी सास, दोनों ही हेनरी से हर क्षेत्र में बढ़िया प्रदर्शन की उम्मीद रखती हैं। उस पर भारी दबाव है। हम इस मुद्दे पर मिलजुलकर काम कर रहे हैं।

वॉरेन, एल्बर्ट, मार्था, मेरी, थॉमस व हेनरी ऐसी चर्चाओं में सबसे ज़्यादा योगदान करते हैं जिनमें अमूर्त विचारों की ज़रूरत हो।

पर्ल, एलिस, एलिज़ाबेथ, वॉरेन, एल्बर्ट, मार्था, मेरी, हेलेन, थॉमस, हेनरी तथा एण्ड्रयू ज़्यादातर व्यावहारिक सुझाव देते हैं और खूब मेहनत करके योगदान करते हैं।

हमारे नन्हे बच्चे बेहद सक्रिय हैं। वे अपनी झिझक को पीछे छोड़ चुके हैं। हर तरह की गतिविधि में उनकी रुचि है। उन्हें खेलना पसन्द है और वे ढेरों सवाल पूछते हैं। उनकी हमेशा आपस में नहीं बनती। एरिक व आइरीन को चार्ल्स नापसन्द है और कभी-कभी वे उसका जीना हराम कर डालते हैं। आइरीन को स्कूल में काम करना नापसन्द है। मुझे अन्देशा यह है कि उसकी माँ घर में उसे काफी ठेलती रहती हैं कि वह हर क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन करे।

इस समूह को सैली की मौजूदगी से लाभ हुआ है। वह बेहद बेतकल्लुफ बच्ची है और जीने का इतना मज़ा लेती है कि उसके चेहरे पर हमेशा खुशी झलकती है। वह कविताएँ, गीत और नाच रचती रहती है और हमेशा ही करने को कुछ

ऐसा तलाश लेती है जो उसे आकर्षित करता हो।

कार्टराइट बच्चे आधा समय अनुपस्थित रहे हैं क्योंकि उनके पास पहनने को ढंग के कपड़े नहीं हैं। स्कूल आने पर वे खूब मेहनत करते हैं, पर बेहद शर्मीले हैं। क्रिसमस उपहार बनाने वाले पीरियड में मैंने उन पर खास ध्यान दिया। एलेक्स ने बँधेज का एक स्कार्फ बनाया, जिसके किनारे उसने खुद सिए। गस ने दीवार पर लटकाने के लिए बाटिक का चित्र बनाया और उसके पीछे लाइनिंग लगाई। मेरा विश्वास है कि उनके घर की सबसे खूबसूरत वस्तुएँ यही होंगी। वर्ना भी कुछ दिन आई थी जब उसने बाटिक का काम किया था, पर उसे किनारे सीने का समय नहीं मिल पाया। रिचर्ड और क्लैरेंस ने स्टेन्सिल की मदद से कुछ टेबल मैट और सुई रखने के होल्डर बनाए।

अभिभावकों के विषय में:

श्रीमती थॉमसन रूथ के प्रति सहयोगी भाव व सहानुभूति रखती हैं, और हम एरिक की उन कामों के लिए तारीफ करते हैं जो वह अच्छी तरह करता है ताकि वह ज़्यादा सुरक्षित महसूस करे। हमारी कोशिश है कि हम लगातार उसकी गलतियाँ न निकालें।

श्रीमती हिल व श्रीमती लेनिक (थॉमस की माँ) मुझे बार-बार धन्यवाद देती हैं क्योंकि स्कूल ने उनके बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है। मैं श्रीमती लेनिक को थॉमस की प्रगति का ग्राफ दिखाती रही हूँ और उन्हें यह भरोसा हो चला है कि थॉमस कुछ सीख रहा है। उन्हें लगता है कि वह एक बेहतर लड़के में बदलता जा रहा है। श्रीमती सामेटिस हमेशा सलाह माँगती रहती हैं, क्योंकि अपने बच्चों के आलोचनात्मक रुख से वे आहत रहती हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि उनकी बेटियों को क्या हो रहा है, सो वे ज़रूरत से ज़्यादा फिक्रमन्द रहती हैं।

श्रीमती ओल्सेउस्की यथासम्भव मदद करने को तैयार रहती हैं। श्रीमती डुलियो दोपहरी के गर्म भोजन के वास्ते उदारता से सहयोग देती हैं।

प्रिन्लैक दम्पत्ति अपने बच्चों को हर गतिविधि में सहयोग करने और अपनी अध्यापिका की मदद करने को प्रेरित करता है क्योंकि वह उनके लिए इतना कुछ करती है। और वे सच में मदद करते हैं! मैंने इस दौरान श्रीमती रैमसे के साथ दो खुशनुमा दोपहरें बिताईं और उन्हें अधिक करीब से जाना। उन्होंने

अपनी रोमांचक जीवनगाथा सुनाईः कैसे उनके माता-पिता क्रान्ति के दौरान रूस से भागे, कैसे उन्होंने फिनलैंड के किसानों की नर्स के रूप में तब तक सेवा की जब तक परिवार को इस देश में लाने के लिए पैसे न जुट गए। उन्होंने अपने खुशगवार बचपन और रसायनशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल करते समय कॉलेज के जीवन के बारे में बताया, और अपनी जुड़वाँ बहन की बात बताई जो अब एक फिलहार्मोनिका संगीत मण्डली के निर्देशक की पत्नी है।

मुझे सैली की माँ को भी जानने का मौका मिला। वे जवान हैं और सैली के विषय में बेहद महत्वाकांक्षी हैं। उन्हें इस बात की तकलीफ है कि सैली को इस ग्रामीण शाला में पढ़ना पड़ता है, क्योंकि उनके अनुसार सैली खिलन्दड़ी लड़के-सी बनती जा रही है। पहले सैली शहर के एक निजी स्कूल में पढ़ती थी जहाँ वह एक शिष्ट नन्ही महिला बनना सीख रही थी। मैंने उन्हें बताया कि सैली जो कुछ भी कर रही है उसमें उसे बड़ा मज़ा आ रहा है और वह एक स्वस्थ व अनुकूलित बच्ची है। सैली को अपना चचेरा बड़ा भाई थॉमस बेहद प्यारा लगता है। थॉमस उससे सहृदयता से पेश आता है।

कुल मिलाकर माता-पिता का दृष्टिकोण अच्छा है। वे सहयोग करते हैं, उनका आचरण मित्रवत व संवेदनशील है, और मुझे उनके प्रति आभार की गहन अनुभूति होती है।

सेब उद्योग सम्बन्धी अध्ययन के बारे में:

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सेब बागान हमारे कस्बे के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यहाँ की आबोहवा इतनी बढ़िया है कि उसमें नरम, खुशबूदार सेब उगते हैं जिनकी बहुत माँग है। उस माँग को पूरा करने लायक उत्पादन हमारी काउंटी कर नहीं पाती। सड़कें व बाज़ार की सुविधाएँ भी पर्याप्त विकसित हैं। सेबों का उत्पादन कैसे किया जाए इसकी समुचित जानकारी भी उपलब्ध है। साथ ही छोटा-मोटा बागान लगाने में खर्च भी बहुत नहीं आता, लेकिन उससे आय पाने के लिए तकरीबन सात साल इन्तज़ार करना पड़ता है।

इस अध्ययन ने बच्चों को उतना नहीं बाँधा जितना दूध उत्पादन के अध्ययन ने बाँधा था।

"स्वस्थ शैक्षणिक अनुभव का मर्मस्थल उद्देश्य में स्थित होता है" – इस कथन को काम में उतारने के लिए मुझे शायद बहुत कुछ सीखना बाकी है।

मोत्ज़ार्ट के जीवन सम्बन्धी नाटक के विषय में:

बच्चों को अब तक जितनी कथाओं का नाट्य रूपान्तर करने में मैंने मदद की, उनमें यह सबसे रोचक कथाओं में से थी। इससे पूर्व क्रिसमस के दौरान प्रदर्शन के लिए जितनी रचनात्मकता से हमने नाटक बनाए, उतनी ही रचनात्मकता का हमने यहाँ भी उपयोग किया था। कई बच्चे इसमें भाग ले पाए और उन्होंने मोत्ज़ार्ट के तीन से चौदह वर्ष तक के जीवन के विभिन्न चरणों को प्रस्तुत किया। सैली तीन वर्षीय मोत्ज़ार्ट बनी थी। पहले दृश्य में मोत्ज़ार्ट परिवार लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट के जन्म की चालीसवीं वर्षगाँठ मनाता है। यह वह दृश्य था जिसमें मोत्ज़ार्ट का तीन वर्षीय बेटा वूल्फगैंग वह पंक्तियाँ कहता है जो प्रसिद्ध हो गई हैं: "पापा, मैं तुम्हें बहुत, बहुत प्यार करता हूँ; ईश्वर के बाद मेरे पापा ही हैं।" सैली कुर्सी पर खड़ी हुई, उसने अपनी बाँहें थॉमस के गले के इर्द-गिर्द डालीं, उसने पूरी भावना से ये पंक्तियाँ कहीं, और फिर उसके गाल को चूमा। दोनों बच्चे बिलकुल भी असहज नहीं थे। वे थॉमस और सैली भी नहीं थे। वे तो लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट और उसका तीन साल का बेटा वूल्फगैंग ही थे! यह इतना वास्तविक था कि दर्शकों में कोई भी नहीं हँसा।

आइरीन छह वर्षीय वूल्फगैंग बनी। दूसरे दृश्य में लियोपोल्ड और उसके मित्र मोत्ज़ार्ट को लिखने में व्यस्त देखते हैं और उनके बीच यह बातचीत होती है:

लियोपोल्ड: और तुम क्या कर रहे हो, वूल्फर्ल?

वूल्फर्ल: पापा, एक पियानो सोनाटा लिख रहा हूँ, पर अभी यह अधूरा ही है।

लियोपोल्ड: कोई बात नहीं, ज़रा देखें तो। ज़रूर अच्छा होगा। शाख्टनर, देखो तो सही, कितना सही और व्यवस्थित है। बिलकुल नियमानुसार लिखा हुआ। पर इसे कोई बजा नहीं सकेगा क्योंकि यह बड़ा कठिन लग रहा है।

मैं वह क्षण कभी नहीं भूलूँगी जब आइरीन ने अपना छोटा-सा सिर उठाया और बड़ी गम्भीरता से थॉमस को कहा, "यह तो एक सोनाटा है, पापा, पहले इसका अभ्यास करना पड़ता है, पर देखिए यह ऐसे बजेगा।" तब आइरीन ने "ए" सप्तक में सोनाटा का प्रारम्भिक भाग बजाया। उसने पहली बार दर्शकों के सामने पियानो बजाया था। उस पल लग यह रहा था कि वह खुद को मोत्ज़ार्ट ही मान रही हो!

नाटक में मोत्ज़ार्ट के संगीत को शामिल करने के कई अवसर थे, सो बच्चों ने सावधानी से उसे सीखा, और प्रदर्शन से पहले उनकी धुनों पर कई गीतों का अभ्यास किया। बच्चों ने बड़ी ईमानदारी से अभिनय किया और दर्शकों को वह पसन्द भी आया।

रेडियो पर गीतों की प्रस्तुतिः

हर माह वेस्ट रेडियो स्टेशन आधे घण्टे का शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसकी सामग्री कस्बे के विभिन्न भागों से संकलित की जाती है। दिसम्बर में हमारे बच्चों से गाने को कहा गया। उन्होंने यह कार्यक्रम प्रस्तुत कियाः

समवेत पाठः
सोप बबल्स (साबुन के बुलबुले)
द विंड हैज़ सच ए रेनी साउन्ड (बयार में वर्षा की ध्वनि है)
लिटिल व्हाइट हॉर्सेज़ (नन्हे श्वेत घोड़े)
द मेन डीप

लोकगीतः
आइरिश – द गैलवेपेपर
इतालवी – टू इटली (इटली की ओर)
जर्मन – लिटिल डस्टमैन
रूसी – कज़ाक हॉर्समैन (कज़ाक घुड़सवार)

शास्त्रीय संगीतज्ञों की प्रस्तुतियाँः
ब्राह्मस् – इन पोलैण्ड देयर इज़ एन इन (पोलैण्ड में है एक सराय)
हेडन – द विन्डस् (हवाएँ)
मोत्ज़ार्ट – स्लीप एण्ड रेस्ट (निद्रा व विश्राम)
बीथोवन – नाइट एण्ड डे (रात्रि व दिन)
बाख़ – द एट्थ साल्म (अष्टम् भजन)

क्रिसमस कैरल (गीत):
साइलैन्ट नाइट (निस्तब्ध रात)
ब्रिंग अ टॉर्च, जैनेट इसाबैला (एक टार्च लाओ, जैनेट इसाबैला)

ओ सैंक्टिसिमा

उन्हें बधाई के कई तार मिले जिनमें उनकी प्रस्तुतियों की प्रशंसा थी। घर बैठे रेडियो पर उनको सुन रहे अनेक अभिभावक भी बेहद प्रसन्न थे। बच्चे रेडियो स्टेशन पर फिदा हो गए और उन्होंने उसके बारे में तमाम सवाल दागे, जिनके जवाब वहाँ के कर्मियों ने धीरज से दिए। बच्चों के लिए यह एक बेहद सार्थक अनुभव रहा।

क्रिसमस नाटक के बारे में:

डिकन्स के *क्रिसमस कैरल* नामक उपन्यास के नाट्य रूपान्तर में थॉमस ने स्क्रूज का किरदार इतनी रचनात्मकता से निभाया कि सबने उसे बधाईयाँ दीं और डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उससे हाथ मिलाया। अगली सुबह जब हम सफाई कर रहे थे तो वह मेरे पास आया और काफी विनम्रता से बोला, "रात मेरा काम काफी अच्छा रहा होगा।" और सच उसने कमाल किया था! समूचा समुदाय उसे आदर से, नई दृष्टि से देख रहा है और थॉमस खुद को भी!

दूसरे दृश्य में, मैंने बच्चों को "सर रॉजर डी कॉवरली" नामक एक खास नृत्य सिखाया था। जहाँ तक बड़ी लड़कियों का सवाल था, उनके लिए यही समूचे नाटक का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने अपने पुरुष साथियों पर खूब चर्चा की। हेनरी इसलिए पसन्द किया जाता था क्योंकि वह सबसे सुन्दर नाचता था। दिसम्बर माह में आप अक्सर यह देखते कि कोई लड़की अपने साथी को हॉल में अभ्यास के लिए ले जाती क्योंकि वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि उसके साथी का पद संचालन बिलकुल सही हो।

एल्बर्ट और वॉरेन ने *क्रिसमस कैरल* का फिल्म रूपान्तर देखा था और उन्होंने हमारी काफी मदद की। वॉरेन ने काफी निर्देशन किया।

नाटक में सभी बच्चों ने शिरकत की, क्लैरेंस के आकार के बच्चों तक ने जिसने टाइनी टिम (नन्हे टिम) का अच्छा अभिनय किया। नाट्य प्रदर्शन के बाद दर्शकों ने हमारे साथ स्तुति गीत गाए और नाटक की खूब तारीफ की।

बुधवार, 28 दिसम्बर

और अब शेष सत्र की योजना बनाने का समय आ गया है। मुझे अपने

पाठ्यक्रम कोर्स के लिए इसकी रिपोर्ट भी लिखनी होगी। ज़ाहिर है कि अच्छी रिपोर्ट लिखने में काफी समय लगाना होगा, सो शायद बेहतर यही रहे कि उसी पर ध्यान केन्द्रित करूँ और दैनन्दिनी या अन्य टिप्पणियाँ लिखना अगले कुछ महीनों के लिए स्थगित करूँ। नया कार्यक्रम मैंने तैयार कर लिया है।

8

मैंने सीखीं नई तकनीकें

धन्यवाद-पर्व (Thanksgiving) के बाद हमने वस्त्र उद्योग का अध्ययन शुरू किया। दिसम्बर में बच्चों ने लाइनोलियम के ठप्पों से छपाई करने का अनुभव किया था। उन्होंने इन ठप्पों से क्रिसमस कार्ड, मेज़पोश व अन्य कपड़े छापे थे। उन्होंने कपड़े पर बाटिक व बँधेज का काम सीखा; स्कार्फ, मेज़पोश व पर्दे बनाए। बच्चे उपहार बनाना शुरू करें उससे पहले मैंने कुछ समय उन्हें डिज़ाइन के विषय में कुछ सिखाने में लगाया। पर मुझे पता चला कि ऐसा करना गलत था। यह एक पुराना तरीका था। बच्चों के पल्ले कुछ पड़ ही नहीं रहा था। जब मैं अपनी व्यवस्थित, क्रमबद्ध सामग्री परोस रही थी तो मैंने इस बात पर विचार ही नहीं किया कि बच्चे दरअसल सीखते कैसे हैं। मैंने उन्हें यह मौका ही नहीं दिया कि वे खुद प्रयोग करते हुए डिज़ाइन के बारे में कुछ जानें। मैं उनकी डिज़ाइन की समझ को विस्तार देने के बदले उसे सीमित कर रही थी। यह समूचा काम पूरी तरह फिस्स इसलिए नहीं हुआ क्योंकि बच्चों को अपने हाथों से काम करना पसन्द है। और जब उन्होंने वास्तव में कुछ करना शुरू कर दिया तो वे करते हुए सीखने का मज़ा लेने लगे। पर अगला चरण क्या हो? क्रिसमस की छुट्टियों के बाद काम को कैसे बढ़ाया जाए?

शायद मुझे पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि कपड़ों के इस अध्ययन से इन बच्चों की कौन सी ज़रूरतें पूरी होंगी। उनमें यह समझ तो विकसित होनी ही चाहिए कि अलग-अलग मौसमों व आयोजनों में वे कैसे कपड़े पहनें। नए कपड़े चुनने में अभिरुचि का होना भी ज़रूरी है। कपड़ों पर खर्च करने के लिए जितनी भी राशि उनके बजट में हो, उसका सबसे अच्छा उपयोग करना उन्हें आना चाहिए। कपड़े खरीदते समय उपभोक्ता किन समस्याओं का सामना करते हैं यह

भी उन्हें मालूम होना चाहिए और इस ज्ञान का समझदारी से उपयोग करना भी आना चाहिए। उन्हें विभिन्न लेबलों की समझ होनी चाहिए, और साथ में उस जानकारी की जो ये लेबल देते हैं। जैसे, वस्त्र की गुणवत्ता, कारीगरी, और किन परिस्थितियों में वह वस्त्र बना है। उन्हें विज्ञापनों को विवेक से पढ़ना-समझना आना चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि आविष्कारों से, जैसे कपड़ा व वस्त्र उद्योग के आविष्कारों से, दुनिया और जीवन शैली में बदलाव कैसे आते हैं।

किशोरी बालिकाओं की एक दूसरी ज़रूरत भी है, जो आकर्षक दिखने में उनकी रुचि से पैदा होती है। बड़े लड़कों, खासकर वे जो कुछ सुस्त हैं, को अपने हाथों से कुछ करने की ज़रूरत भी है। इससे उनके समक्ष उनकी समझ के दायरे में ही एक व्यापक दुनिया खुलेगी।

शायद मुझे स्कूल में कुछ सामग्रियाँ ले जानी चाहिए। अगर हम उन सामग्रियों और अपने वस्त्रों को जाँचें और यह जानने की कोशिश करें कि वे किस चीज़ से बने हैं, तो बच्चों की रुचि जग सकती है।

मंगलवार, 3 जनवरी 1939

आज मैंने शुरुआत बच्चों से यह पूछकर की कि क्या वे जानते हैं कि उनके कपड़े किन चीज़ों से बने हैं। हमें सूत, ऊन, रेशम व रेयॉन के बने वस्त्र तो मिले पर लिनेन के नहीं। बच्चों ने डिब्बे में रखे कपड़े के टुकड़ों को बड़ी सावधानी से जाँचा और पूछते रहे, "क्या यह लिनेन है?" तब, कई बार गलत पहचान करने के बाद उनकी ओर से पहला सवाल आया, "पहचान कैसे की जाती है?" मैंने प्रश्न समूह की ओर ही उछाल दिया। हेलेन बोली, "लिनेन आसानी से मुस जाता है।" इस पर दूसरे बच्चों ने कहा कि सभी तरह के कपड़े मुसते हैं। इस रास्ते पहचान करना कठिन था। एल्बर्ट का कहना था कि कुछ सूत लिनेन जैसा दिखता है, इसलिए पहचान करना मुश्किल था। एण्ड्रयू ने कहा कि उसका भाई छूकर विभिन्न प्रकार के कपड़ों को पहचान सकता है। बच्चों ने टुकड़े उठा लिए और वे उन्हें स्पर्श से जानने की कोशिश करने लगे। इस दौरान वॉरेन बोला कि ऊन की पहचान जलाने पर उससे निकलने वाली गन्ध से हो सकती है। हमने यह करके देखा। बच्चे फौरन जलती ऊन से निकलती पशु-गन्ध को पहचान गए। कुछ टुकड़े ऐसे भी थे जो देखने में ऊनी लगते थे पर जलाने के परीक्षण में उनकी गन्ध ऊन जैसी नहीं थी। मार्था ने कहा कि कपड़े का अधिकतर भाग

शायद सूती है और उसमें कुछ ऊन मिलाई गई है। उसने बताया कि उसके पास एक स्वैटर था जो सूत और ऊन के मिश्रण से बना था। बच्चों ने सुझाया कि दूसरी तरह के नमूनों को जलाकर देखना चाहिए कि क्या होता है। जॉर्ज ने रेशम का एक टुकड़ा जलाया। बच्चों ने देखा कि ऊन की तरह रेशम भी जलने पर एक परत छोड़ देता है और उसकी एक खास तरह की गन्ध होती है। कुछ कपड़े स्पर्श से रेशम जैसे लग रहे थे, पर दरअसल थे नहीं। जलाने पर उनके मोटे-मोटे, खुरदुरे-से किनारे निकल आए। रूथ ने टिप्पणी की, "यह ज़रूर रेयॉन होगा।" इस पर जॉर्ज ने सूती कपड़ा जलाया जो रेयॉन-सा जला। "जलाकर हम अन्तर नहीं जान पाएँगे," एल्बर्ट बुदबुदाया। पॉल बोला, "खैर, सूती कपड़े और रेयॉन में अन्तर करना आसान है। एक चमकीला होता है, दूसरा नहीं।" "ना, ऐसा भी नहीं है," रूथ ने बात काटी। "सिलाई क्लब में मैं अपनी ड्रेस बना रही हूँ। यह एक खास तरह के सूती कपड़े की है जो चमकीला है।" "पर वह रेयॉन से कहीं भारी है," पर्ल ने पलटकर जवाब दिया। "मिस वेबर के पास एक नायलॉन की ड्रेस है जो मेरे सूती लट्ठे जितनी ही भारी है, और देखने में भी वैसी ही लगती है," रूथ ने निर्णयात्मक ढंग से कहा। समय प्रायः खत्म हो चला था। सो मैंने सुझाया कि वे घर पर रखी सामग्री देखें और माता-पिता से पूछें कि उनमें फर्क कैसे किया जा सकता है।

बुधवार, 4 जनवरी

आज मैंने बच्चों से पूछा कि घर पर उन्हें क्या पता चला था। वॉरेन ने बताया कि उसकी माँ का कहना था कि ऊन और रेशम पशुओं से प्राप्त होते हैं, इसलिए उनकी गन्ध चिड़ियों के पंख जैसी अजीब-सी होती है। सूती और लिनेन के कपड़े वनस्पति से प्राप्त तन्तुओं से बनते हैं। रूथ ने कहा कि रेयॉन भी वनस्पति से बनता है। "क्या वह पेड़ों से नहीं बनता?" वॉरेन ने कहा कि रेयॉन कृत्रिम तन्तु से बनता है।

बच्चों को सूझा कि वे अपनी-अपनी कॉपियों में हर तरह की सामग्री के नमूने लगाएँगे। सो हमने कपड़ों को सूती, ऊनी, रेशमी, रेयॉन, लिनेन व अज्ञात की ढेरियों में छाँटना शुरू कर दिया। "लाइनिंग स्टोर ने सिलाई क्लब के लिए जो कपड़ों के नमूने भेजे थे, क्या उनको काम में नहीं लाया जा सकता? उनमें से हरेक के पीछे लिखा है कि वह किस तरह का कपड़ा है," मेरी ने सुझाया। मेरी उन्हें ले आई और बच्चों ने देखा कि उन्हें किस तरह काटकर लगाया गया था।

वे यह सब कर ही रहे थे कि सोफिया ने गौर किया कि सूती कपड़ों के ढेरों प्रकार हैं और डेनिम और नैनसूक में कितना भारी अन्तर है। मैंने बच्चों को बताया कि रेयॉन के भी कई नाम हैं, पर क्योंकि रेयॉन उद्योग अभी नया है, हम उनसे परिचित नहीं हैं। डॉरिस ने दो तरह के ऊनी कपड़े उठाकर कहा, "ऊनी कपड़ों में भी अन्तर होता है। लाइनिंग स्टोर ने उनमें से एक को ऊनी क्रेप कहा है।"

वॉरेन काफी देर से चुपचाप कपड़े छाँट रहा था, पर अब सिर उठाकर बोला, "हम कभी भी पक्के भरोसे से यह नहीं कह पाएँगे कि हम सही हैं। जिन वस्त्र कारखानों में कपड़े सीने के लिए हर तरह की सामग्री मँगवाई जाती है, वे भला क्या करते हैं? क्या उनके पास निश्चित तौर पर फर्क करने का कोई खास तरीका है?" मैंने उसे बताया कि आजकल माइक्रोस्कोप के बिना विभिन्न सामग्रियों में साफ अन्तर करना लगभग असम्भव हो चला है। मेरे मुँह से शब्द निकले नहीं थे कि मुझे सूझा कि हम डॉ. ब्रीड के स्कूल से माइक्रोस्कोप का जुगाड़ बैठा सकते हैं। लड़के-लड़कियों के लिए यह बड़ा मोहक अनुभव रहेगा!

सोमवार, 9 जनवरी

शनिवार को डॉ. ब्रीड से मुझे माइक्रोस्कोप मिल गया और इसे मैं आज स्कूल ले आई। माइक्रोस्कोप ने दिन भर का कार्यक्रम गड़बड़ा दिया। छोटे बच्चे भी यह देखना चाहते थे कि क्या हो रहा है। मैंने सबसे पहले कपास का तन्तु लगाया और हरेक बच्चे ने उसकी बड़ी छवि को ध्यान से देखा। आश्चर्य और उत्साह की तरह-तरह की ध्वनियाँ सुनाई दीं। बच्चों ने विभिन्न प्रकार के तन्तुओं में अन्तर करना सीखा। उनकी योजना यह है कि वे इनके चित्र अपनी कॉपियों में बनाएँगे।

दोपहर को बच्चों ने माइक्रोस्कोप से कई दूसरी चीज़ें भी देखीं। वॉरेन ने अपना खाली समय एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के बाल संस्करण को पढ़ने में बिताया। उसने माइक्रोस्कोप के सभी भागों के बारे में पढ़ा, और यह भी कि वह कैसे काम करता है।

मंगलवार, 10 जनवरी

आज सुबह हमने माइक्रोस्कोप द्वारा "अज्ञात" कपड़ों के ढेर में से कपड़े जाँचने शुरू किए ताकि उनके स्वरूप के बारे में पता चल सके। जैसा कि बच्चों को

पहले ही लग रहा था, इनमें से कई कपड़े मिश्रित तन्तुओं से बने थे।

अब तक मैं ही माइक्रोस्कोप में नमूने लगाती रही थी। दोपहर को वॉरेन ने अनुरोध किया कि उसे इसकी इजाज़त दी जाए। उसने कहा कि उसे पता है कि वह कैसे काम करता है और उसे सुरक्षित कैसे रखा जाए। मैंने कुछ देर उसे काम करते देखा और तब रुचि ले रहे बच्चों के समूह के साथ उसे काम करते छोड़ चली आई। मैं जहाँ काम करने बैठी वहाँ उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह कह रहा था, "याद है पिछले साल हमने मैग्नीफाइंग ग्लास का उपयोग कर चीज़ों को असल आकार से बड़ा करके देखा था? माइक्रोस्कोप भी ठीक वैसे ही काम करता है। फर्क इतना है कि यह ज़्यादा शक्तिशाली होता है, क्योंकि इसमें अक्सर दो से अधिक लैन्स होते हैं।" वह जो कुछ कह रहा था पूरी तरह समझकर कह रहा था, इसलिए बच्चे भी उसकी बात समझ पा रहे थे।

दोपहर के इस पीरियड में बच्चों ने माइक्रोस्कोप से कपड़ों के टुकड़े जाँचने शुरू किए ताकि वे बुनाई के नमूनों को देख सकें। उनकी रुचि कपड़ों की बुनावट की खूबसूरती में ही थी।

बुधवार, 11 जनवरी

आज सुबह मैंने बच्चों से बुनावट को बारीकी से देखने को कहा। उन्होंने कई तरह के नमूने जाँचे और पाया कि तीन तरह की बुनावट दोहराई गई है। मैंने मे को बुनने की किताब पकड़ाई और उससे कपड़े बुनने के बारे में जानकारी इकट्ठा करने को कहा। मे ने पता लगाया कि वे तीन मुख्य प्रकार की बुनावटों को देख रहे हैं। बच्चों ने उनके नमूने अपनी कॉपियों में उतारने का फैसला किया। जब हम साटिन के कपड़े के एक टुकड़े को देख रहे थे, मार्था ने पूछा, "इसे कैसे बुना जाता है?" मैंने बच्चों से जानना चाहा कि क्या वे करघों पर खुद कुछ कपड़े बुनना चाहेंगे। उन्होंने उत्साह जताया।

सोमवार, 16 जनवरी

हमने डॉ. ब्रीड को माइक्रोस्कोप के लिए धन्यवाद देते हुए एक साझा पत्र लिखने की योजना बनाई। पत्र बड़े स्नेह और कृतज्ञता भरे शब्दों में लिखा गया, जो साफ जताता था कि माइक्रोस्कोप बच्चों के लिए क्या मायने रखता है। डॉरिस, जो फिलहाल सचिव है, ने पत्र सुन्दर अक्षरों में उतारा और उसे भेज दिया।

मंगलवार, 17 जनवरी

मैंने रूथ, डॉरिस, मे और सोफिया को किताबें दीं और कहा कि वे नवाजो इण्डियन (Navajo Indian) करघे, बॉक्स करघे, गोद करघे और बड़े फ्रेम वाले खटका खींचकर चलाए जाने वाले करघे के बारे में पता लगाएँ। मैंने उनकी मदद की ताकि वे अपनी रपटें समूह के सामने व्यवस्थित रूप से रख सकें। इस दौरान समूह के शेष बच्चे अपनी कॉपियों में काम करते रहे।

बुधवार, 18 जनवरी

आज लड़कियों ने अपनी रपटें सुनाईं तथा बच्चों ने ध्यान से सब कुछ सुना ताकि वे यह तय कर सकें कि वे किस तरह के करघे बनाना चाहेंगे। प्राथमिक समूह के बच्चों ने भी सुना। उनमें से कई ने इच्छा ज़ाहिर की है कि वे भी करघे बनाकर कपड़ा बुनना चाहेंगे। रूथ का कहना था कि छोटा नवाजो इण्डियन करघा बनाना मुश्किल नहीं है, सो प्राथमिक समूह के बच्चे उसे बना सकते हैं। पाँच-छह साल के बच्चों को लगा कि वे तो छूट ही गए। मैंने वादा किया कि वे कार्डबोर्ड के छोटे करघे बना सकते हैं, जिससे वे पतली पट्टियाँ बुन सकेंगे और उनसे गमला टाँगने के छींके बनाए जा सकेंगे।

शुक्रवार, 20 जनवरी

लड़कों ने विभिन्न करघों को बनाने के लिए आवश्यक लकड़ी की सूची बनाई और स्कूल के बाद हम लकड़ी की टाल पर गए ताकि ज़रूरी सामग्री खरीदी जा सके। डॉरिस ने न्यू यॉर्क स्थित औद्योगिक कला सहकारी सेवा को सूती व ऊनी धागों के लिए पत्र लिखा। बच्चों ने तय किया कि वे छोटी किताबिया और बेल्टें बनाएँगे। नन्हे बच्चे नवाजो करघों पर मोटी पट्टियाँ बुनेंगे।

शुक्रवार, 3 फरवरी

पिछले दो हफ्तों से हम करघे बनाने में जुटे रहे हैं। मैंने निर्देश सावधानी से नहीं पढ़े थे, जो ठीक ही रहा क्योंकि बच्चों को खुद अपनी योजनाएँ बनानी पड़ रही थीं। और बार-बार निर्देश पढ़ने पड़ रहे थे। इससे वे और भी आत्मनिर्भर बने हैं। मेरा विश्वास है कि हरेक बड़ा बच्चा अब बिना किसी दूसरे की मदद लिए खुद एक और करघा बना सकता है। एडवर्ड, जो पढ़ने में कमज़ोर है, उसने भी

बिना मेरी मदद के एक बॉक्स करघा बना डाला। उसने तीन दूसरे बच्चों की भी खूब मदद की जिन्हें अपने बॉक्स करघे बनाने में दिक्कतें आ रही थीं। जॉर्ज ने नवाजो करघा बनाना सीखा और प्राथमिक समूह के बच्चों को सिखाया कि उसे कैसे बनाया जाए। उसने इस पूरे उपक्रम पर नज़र रखी।

हमारे अध्ययन के इस पक्ष ने बच्चों, खासकर बड़े लड़कों की एक भारी ज़रूरत पूरी की है। यह ज़रूरत है अपने हाथों से कुछ करने-बनाने की। क्योंकि उनके सामने एक मज़बूत लक्ष्य था, इसलिए उन्होंने निर्देश बड़ी मेहनत और सावधानी से पढ़े।

अन्ततः मे की किसी ऐसी चीज़ में रुचि जगी है जो हम स्कूल में कर रहे हों। उसने एडवर्ड की थोड़ी-बहुत मदद से एक बॉक्स करघा बनाया और अब एक छोटी कितबिया के लिए बुनाई कर रही है। शेष लड़कियाँ तो तब से ही रुचि लेने लगीं थीं जब हमने कपड़े जाँचने शुरू किए थे।

शुक्रवार, 17 फरवरी

फिर दो हफ्ते गुज़र गए हैं। बच्चे बुनने में व्यस्त रहे हैं और जैसे ही दूसरे काम खत्म होते हैं, वे फौरन उस की तरफ लौट आते हैं। इस सारे समय मैं यह सोचती रही हूँ कि अब आगे क्या करना है। बच्चों की ओर से कोई संकेत नहीं मिल पाया है; वे तो कपड़े बुनने में ही मगन और सन्तुष्ट हैं। इस दौरान मैं कपड़ों के बारे में लगातार इतना पढ़ती रही हूँ कि ऊब चुकी हूँ। अध्ययन के इस पक्ष पर लगभग सात सप्ताह लग चुके हैं। यह समय काफी लम्बा लगता है। पर हम इस पर फैसला कैसे लें? जैसे-जैसे अध्ययन आगे बढ़ेगा, उसके ऐसे नतीजे भी सामने आ सकते हैं जिनको मैंने अपनी सूची में शामिल नहीं किया है। ये नतीजे शायद ऐसे हों जो अब तक ज़ाहिर नहीं हुए हैं पर जो शायद बच्चों को वह सब समझने में मदद करें जो हम भविष्य में करेंगे। मेरा ख्याल है कि यही इस बात की असली जाँच होगी कि हमने अब तक जो समय लगाया है वह सार्थक था या नहीं।

इस दौरान हमने कोई औपचारिक चर्चा नहीं की है। हमने हरेक पीरियड में केवल काम ही किया है। हमें जब कुछ जानना होता तो हम रुकते, जानकारी लेते और आगे बढ़ जाते। यह तकनीक अब तक सही लगती रही है, पर मुझे

लगातार इसका मूल्यांकन करना होगा। बच्चों ने कुछ ऐसे सवाल उठाए जिनसे अध्ययन आगे बढ़ा। जब बच्चों का उत्साह चढ़ाव पर दिखा तब मैंने अगले कदम सुझाए। यह तकनीक और इससे मिले अवसर बच्चों के लिए और मेरे लिए भी नए हैं। सम्भव है कि भविष्य में वे ही ज़्यादा सवाल उठाएँ। जैसे-जैसे काम बढ़ता है मुझे अन्य चीज़ों के अलावा इस पर खास नज़र रखनी होगी।

अगले कदम क्या हों? उदाहरण के लिए, विभिन्न प्रकार के तन्तुओं से कपड़ा बनाने की प्रक्रिया के अध्ययन से हम ऊन की प्रकृति, उसकी देखभाल, उससे ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया, क्या वह गर्मी की चालक है, क्या उसे आसानी से धोया, साफ किया जा सकता है, क्या वह महँगी होती है आदि के बारे में काफी कुछ जान चुके हैं। मुझे लगता है कि इस प्रकार के अध्ययन से हम बालक-बालिकाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा उनकी वित्तीय व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

शायद वह समय आ चुका है जब मुझे कपड़े बुनने में बच्चों की इस रुचि को कपड़ा निर्माण की प्रक्रियाओं के गहन अध्ययन की ओर मोड़ना चाहिए। अध्ययन के प्रारम्भ में मैंने जो गलती की थी – यानी शुरू में ही विषय-वस्तु की रूप-रेखा खींच देना – उससे बचने के लिए शायद मुझे कुछ कच्ची ऊन स्कूल ले जानी चाहिए और बच्चों को उसे धोने को कहना चाहिए। बच्चों ने पड़ोस के पशुपालक की भेड़ों की ऊन उतरते देखी है। वे जानते हैं कि ऊन कहाँ से आती है। हम ऊन से शुरुआत इसलिए करेंगे क्योंकि उसे कातना आसान है और कपास से कहीं ज़्यादा आसानी से उससे काम किया जा सकता है।

मुझे लगता है कि बच्चों को ऐसा उत्तेजक अनुभव देना अच्छी शुरुआत होगी और मैं तब तक इस तरीके को काम में लेती रहूँगी जब तक मैं इसे सिद्ध न कर दूँ या इसे छोड़ने का कोई ठोस कारण न उभरे। ऐसे अनुभवों को आँख मूँदकर नहीं चुना जा सकता। अनुभव ऐसा होना चाहिए जो विकास और अन्य अनुभवों की सम्भावनाएँ खोलता हो, जिससे जिज्ञासा जगती हो और ऐसे मज़बूत उद्देश्य उभरते हों जो बच्चों को सीखने के लिए उकसाएँ।

जब तक यह अध्ययन चल रहा है मुझे कुछ सवाल खुद से पूछने चाहिए। क्या बच्चों की वास्तव में गहरी रुचि है? क्या वे समझ रहे हैं? क्या वे सोचने के आधार के रूप में सही और विविध तथ्यों को काम में ले रहे हैं? क्या वे एक-

दूसरे के साथ जीना सीख रहे हैं? जो कुछ वे सीख रहे हैं उस बारे में क्या वे खुद कुछ निर्णय ले सकते हैं, फिर चाहे वह निर्णय कितना भी छोटा क्यों न हो? जिस दुनिया में वे जीते हैं, क्या उसके बारे में उनकी समझ कुछ बढ़ रही है?

मंगलवार, 21 फरवरी

मैं औद्योगिक कला सहकारी सेवा द्वारा भेजी गई कुछ अनधुली ऊन स्कूल ले गई और बच्चों से पूछा कि क्या वे उससे कपड़े का एक टुकड़ा बुनना चाहेंगे। तुरन्त सवाल दागा गया, "यह भला हम कैसे करेंगे?" क्योंकि ऊन बहुत ज़्यादा नहीं थी, मैंने सुझाया कि लड़कियाँ उसे धो डालें। उन्होंने समूह बना पहले तो पढ़कर यह जाना कि धुलाई कैसे की जाए। लड़कों को मैंने ऊन धुनकने का यंत्र दिखाया जो मुझे अपने घर की अटारी में मिला था। जॉर्ज और एडवर्ड ने वैसी ही दो और धुनकियाँ बना डालने की पेशकश की ताकि अधिक बच्चे ऊन धुन सकें। उन्होंने औज़ार निकाले और काम करने हॉल में चले गए। शेष लड़कों को मैंने तीन तकलियाँ दिखाईं, जिनमें वज़न लटका था। ये मैंने सहकारी स्टोर से खरीदी थीं। मैंने उन्हें सिखाया कि उससे सूत कैसे काता जाता है। यह काम मुझे मेरी माँ ने सिखाया था। इस सब में बड़ा मज़ा आया।

गुरुवार, 23 फरवरी

छुट्टी से पहले हम जो कुछ कर रहे थे उसी के उत्साह में वापस लौटने के प्रयास में प्रत्येक समूह ने शेष समूहों को बताया कि मंगलवार को वे क्या कर रहे थे। सोफिया ने हमें साफ कच्ची ऊन का एक टुकड़ा दिखाया और बताया कि उसे उलझने से बचाने के लिए क्या सावधानियाँ उन्होंने बरती थीं। जॉर्ज और एडवर्ड ने धुनकी का उपयोग समझाया और उनके द्वारा बनाई गई धुनकियाँ दिखाईं। एल्बर्ट ने तकली से कताई की विधा का प्रदर्शन किया। बचा हुआ समय हमने ऊन को धुनने और उससे सूत कातने में बिताया। मैंने सुझाव दिया कि ऊन से बने एक छोटे से टुकड़े को बनाने के लिए सूत कातने और बुनने में जितना समय हमें लगे, उसको हम दर्ज कर लें। उम्मीद है कि हम इससे कुछ महत्वपूर्ण सामान्यीकरणों तक पहुँच सकेंगे।

बच्चों में कुछ ऐसी रुचि जगी कि वे दिन भर, अपना दूसरा काम खत्म होते ही, तकलियों से धागा कातने के लिए लौटते रहे। हर बार वे ब्लैकबोर्ड पर उतने

मिनट दर्ज करते जितने मिनट उन्होंने काम किया होता। स्कूल खत्म होने से पहले ही उन्होंने सारी ऊन खत्म कर डाली थी।

शुक्रवार, 24 फरवरी

रूथ के पास एक धातु का बना छोटा करघा है जिसकी चौड़ाई और लम्बाई घटाई-बढ़ाई जा सकती है। समूह ने सुझाया कि हम ऊन से एक टुकड़ा बुनने के लिए इसी करघे का उपयोग करें। रूथ अपने करघे को चलाना जानती थी, सो उसने ताने के धागे डाले और शेष बच्चों को बताया कि बाना कैसे बुना जाए। बच्चों के रिकॉर्ड के अनुसार सत्ताइस गज़ ऊन के धागे को कातने में और उससे पाँच इंच लम्बे व पाँच इंच चौड़े दो छोटे टुकड़े बुनने में उन्हें पूरे चार घण्टे लगे थे। कपड़ा अनगढ़-सा था, कहीं मोटा तो कहीं पतला। समान मोटाई का सूत कातने में अभ्यास की ज़रूरत होती है। बच्चों की टिप्पणियाँ ठीक वैसी थीं जैसी मैंने उम्मीद की थी। "हाथ से बुनना कठिन है और इसमें काफी समय लगता है।" "हमें तो मज़ा आया, पर अगर पूरे परिवार के लिए कपड़े बनाने हों तो जान ही निकल जाए।" "एक पूरी ड्रेस या सूट इस तरह बनाना हो तो बहुत समय लगेगा। औपनिवेशिक काल के लोगों को भी क्या कातने-बुनने में इतना ही समय लगता होगा?" जॉर्ज को एक छोटे चरखे का चित्र मिला और उसने तय किया कि वह भी एक चरखा बनाने की कोशिश करेगा।

मंगलवार, 28 फरवरी

मिस मोरान ने हमें रेयॉन बनाने की समूची प्रक्रिया की एक प्रदर्शनी भेजी। बच्चों ने उसे बड़ी रुचि से देखा। मार्था ने पूछा, "हम ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया को ठीक ऐसे ही क्यों नहीं दर्शा सकते?" रूथ ने सुझाया कि हम इस प्रदर्शन के लिए अपने "हाथों से बुने" टुकड़ों में से एक को रंग डालें। हमने कुछ समय तक अपने संग्रहालय के लिए प्रदर्शनी बनाने पर बात की। बच्चों ने सुझाया कि हम इसमें अनधुली कच्ची ऊन, धुली और धुनी हुई ऊन, ऊन और हाथकता धागा, हाथबुना कपड़ा और रँगा हुआ कपड़ा लगाएँ और सबके नीचे यह लिखें कि वह क्या है। मैंने सलाह दी कि हम अपने टुकड़े को रँगने से पहले घर में बने रंगों से कुछ प्रयोग कर लें।

बुधवार, 1 मार्च

हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा के बुलेटिन में देसी रंगों सम्बन्धी जानकारी पढ़ी। बुलेटिन में लिखा था कि विभिन्न चीज़ों, जैसे एसेटिक एसिड, सोडा, फिटकरी, आयरन सल्फेट आदि का उपयोग कर सूती, ऊनी, लिनेन, रेशम आदि कपड़ों को रँगकर इसे चार्ट में दर्शाया जा सकता है।

हमने अपनी कॉपियों के लिए ऐसे कई चार्ट बनाए और हरेक के सामने एक चौकोर स्थान छोड़ दिया ताकि उसमें रँगे हुए नमूने लगा सकें। कल बच्चे मेपिल, सफेद व लाल बलूत, जंगली चेरी, सैसाफ्रेस तथा अखरोट के पेड़ों की छालें और प्याज़ के छिलके लाएँगे। जॉर्ज, एडवर्ड और थॉमस ने आज अपना छोटा चरखा तैयार किया और उससे ऊन कातने की कोशिश की। चरखा ठीक से चल नहीं पाया और हमें तो लगा कि तकली से सूत कातने में भी इतना ही समय लगता है, पर लड़के इस मशक्कत से कताई की प्रक्रिया को अधिक अच्छी तरह समझ पाए।

गुरुवार, 16 मार्च

पिछले सप्ताह हम रँगाई के प्रयोग करते रहे। रँगे चौकोर टुकड़े जब सूख गए तो बच्चों ने अपनी-अपनी कॉपियों में उन्हें चिपका लिया। रँगाई प्रक्रिया और अपने प्रयोगों के नतीजे वे दर्ज करते रहे हैं। मे और डॉरिस की रुचि काफी है पर हमारी मुख्य रंगरेज़ पर्ल है। वह और एलिस घर पर अपने आप भी कुछ प्रयोग करती रही हैं।

सामाजिक अध्ययन की अधिकांश कक्षाओं में हम मौजूदा घटनाओं पर चर्चाएँ करते रहे हैं। जब किसी घटना की पृष्ठभूमि को समझने के लिए विगत परिस्थितियों को जानने की ज़रूरत होती है तो बच्चे अपनी इतिहास और भूगोल की किताबों को सन्दर्भ पुस्तकों के रूप में पढ़ते हैं। इन घटनाओं की जानकारी उन्हें *करेन्ट इवेन्ट्स* तथा *वीकली रीडर* नामक पत्रिकाओं से भी मिलती है। उनकी कॉपियों में ताज़ा घटनाओं वाला भाग सबसे बड़ा है। दीवार पर टँगे दुनिया के नक्शे पर वे उन स्थानों को दर्ज करते हैं जिनके बारे में उन्होंने पढ़ा हो।

आज सुबह रूथ ने मुझसे कहा, "आपका नया स्वैटर बड़ा अच्छा है, मिस वेबर। क्या यह अंगोरा ऊन का है?" मेरा जवाब था, "नहीं, यह एल्पाका है।" "एल्पाका क्या होता है?" रूथ ने जानना चाहा। मेरे बताने पर रूथ बोली, "मुझे नहीं पता था कि भेड़ और बकरियों के अलावा दूसरे पशुओं से भी ऊन मिलता है।"

सामाजिक अध्ययन की कक्षा में मैंने समूह को सुबह की बातचीत के बारे में बताया। मैंने बच्चों को अपने स्वैटर का लेबल दिखाया। वे भी अपने कोट और स्वैटर कक्षा में ले आए और जानने की कोशिश करने लगे कि उन पर लगे लेबलों से ऊन के अन्य स्रोतों का पता चल सकता है या नहीं। बच्चों को अपने लेबलों में "ऊन," "वर्स्टेड" और एक पर "उपभोक्ता संघ" लिखा मिला।

जब यह सब चल रहा था, रूथ को एक किताब मिल गई जिस में लिखा था कि ऊन याक, लामा, ऊँट, एल्पाका, भेड़ और बकरी से पाई जाती है। "अरे हाँ, ऊँट," वह बोली, "मुझे पता होना चाहिए था। मेरी बहन के पास एक कोट है जो ऊँट के बालों से बना है।" एण्ड्रयू ने सुझाया कि अच्छा हो अगर हम दुनिया के एक बड़े नक्शे पर उन पशुओं के चित्र लगाएँ जिनसे ऊन मिलती है। उसी साँस में वह बोला, "यह मैं करूँगा।" यह विचार उसे न्यू जर्सी के उद्योगों के एक सचित्र नक्शे को देखकर आया था। यह नक्शा बच्चों को खूब पसन्द है।

कक्षा खत्म होने से पहले मैंने बच्चों को याद दिलाया कि उन्होंने आज कई प्रश्न उठाए हैं जिन्हें हमें भूलना नहीं है। वर्स्टेड व ऊनी कपड़े में क्या अन्तर है? उपभोक्ता संघ के लेबल का क्या मतलब है? ऊन किन-किन पशुओं से मिलती है? हमने इन सवालों को एक चार्ट पर लिख लिया ताकि बाद में उनके बारे में अध्ययन किया जा सके।

शुक्रवार, 17 मार्च

हम समूह में रँगाई के साथ जिस हद तक प्रयोग करना चाहते थे कर चुके हैं। फिटकरी के साथ प्याज़ का मिश्रण एक खूबसूरत पीले रंग में तब्दील हो गया, जो ऊन के लिए सबसे बढ़िया था। सो हमने हाथ से बुने एक ऊनी टुकड़े को इसी में रँगा। पर्ल को यह सम्मान दिया गया। प्रयोगों के मटमैले नतीजों को देख वॉरेन ने टिप्पणी की, "तभी तो हमारे देश के शुरुआती बाशिन्दे इतने बदरंग-से कपड़े पहना करते थे।"

सोमवार, 20 मार्च

लेबलों को पढ़ने के प्रति रुचि बनी हुई है। आज सुबह एक व्यक्ति ने विलियम और हेनरी को स्कूल तक छोड़ा। इन दोनों ने अनुरोध किया कि क्या वे उसके कोट का लेबल देख सकते हैं। उसका कोट लामा ऊन से बना था। उस व्यक्ति ने बताया कि उसका कोटा महँगा है। जब स्कूल आए तो दोनों बड़े उत्साह से यह किस्सा सुनाने लगे। हेनरी ने जानना चाहा, "कुछ ऊनी कपड़े दूसरे ऊनी कपड़ों की तुलना में इतने महँगे क्यों होते हैं?" हमने गुरुवार को प्रश्नों का जो चार्ट बनाया था उसमें यह सवाल भी जोड़ दिया।

एण्ड्रयू ऊन के स्रोतों वाले दुनिया के नक्शे पर काम करना चाहता था। बच्चों को लगा कि इससे पहले "कौन-कौन से पशुओं से ऊन मिलती है?" प्रश्न के उत्तर पर शोध करना चाहिए। जब एण्ड्रयू बड़े कागज़ पर दुनिया के नक्शे की रेखाएँ बनाने लगा, तब शेष बच्चे अपनी भूगोल की किताबों व अन्य सन्दर्भ पुस्तकों की ओर मुड़े। मैंने सुझाया कि जब वे पढ़ ही रहे हैं तो वे हमारे दूसरे सवालों के जवाब भी ढूँढें। जानकारी मिलने पर वे इनके सन्दर्भों की सूचना ग्रन्थसूची कार्डों पर दर्ज कर लें, और उन्हें कार्डों की फाइल में रख दें, जैसा हम पहले भी कर चुके हैं। बच्चे काम में लग गए और मैंने टिप्पणियाँ बनाने में उनकी मदद की। सन्दर्भ पुस्तकें चुनने तथा विषयसूची का उपयोग करने में मैंने छोटे बच्चों की मदद की।

मंगलवार, 21 मार्च

बच्चों ने जो सूचनाएँ एकत्रित की थीं हमने उस पर चर्चा शुरू की। वे ऊन वाले पशुओं की सूची बना चुके थे। सो हमने इस विषय पर बातचीत की कि ये पशु अपने-अपने क्षेत्र में कैसे जीते हैं। उन्होंने एण्ड्रयू के लिए इन जानवरों के अच्छे चित्र चुने थे और उसे यह भी बताया कि वे नक्शे में कहाँ पर बनाए जाएँ।

डॉरिस को पता चला कि भेड़ें कई प्रकार की होती हैं। उसकी टिप्पणी थी, "इसीलिए शायद उनकी कीमतें भी अलग-अलग होती हैं।" वॉरेन ने जोड़ा, "भेड़ों की देखभाल भी तो काफी करनी पड़ती है ताकि उनकी ऊन बिलकुल साफ रहे। इसका भी तो कीमतों पर असर पड़ता है।" जल्दी ही हमें एक रूपरेखा दिखाई देने लगी।

ऊनी कपड़ों की कीमतें नीचे दर्ज की गई बातों पर निर्भर करती हैं:

1. भेड़, बकरी या दूसरे ऊन वाले पशुओं की नस्ल।
2. पशुओं की देखभाल।
3. जिस प्रक्रिया से ऊनी कपड़ा बनाया जाता है।
4. मज़दूरी।

अब हमारा अध्ययन और चर्चाएँ अधिक केन्द्रित हो सकेंगी। यह एक नई तरह की तकनीक है। हमने तय किया कि हम इस रूपरेखा के पहले प्रश्न पर कल विचार-विमर्श करेंगे।

बुधवार, 22 मार्च

हमने इस प्रश्न पर चर्चा शुरू की, "जिस प्रकार के पशु से ऊन प्राप्त हुई हो, उसका कीमत पर कैसे असर पड़ता है?" हम इस सवाल पर बात कर ही रहे थे कि सोफिया ने हमें ऊनी और वर्स्टेड कपड़े का अन्तर बताया। यह अन्तर बच्चों के कपड़े में साफ नज़र आ रहा था। चर्चा उतनी सहज नहीं थी जितनी होनी चाहिए थी। मुझे लगता है कि बच्चों को फिर से चर्चा करने के अपने तरीकों को जाँचना होगा।

गुरुवार, 23 मार्च

हमने कल की चर्चा पर विचार किया और बच्चों ने निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखने के वास्ते सूचीबद्ध किया:

1. बातचीत को विषय-वस्तु पर ही केन्द्रित रखा जाए।
2. सबकी बात ध्यान से सुनी जाए ताकि हम उन सवालों को वापस न दोहराएँ जिनके जवाब मिल चुके हैं।
3. पूरे समूह को सम्बोधित किया जाए।
4. सूचना इस रूप में हो जिसे आसानी से बाँटा जा सके।
5. एक समय पर एक ही बच्चा बोले। दूसरे धीरज से अपनी बारी का इन्तज़ार करें।
6. किसी को सुधार करवाना हो या कोई सुझाव देना हो तो वह शिष्टता से बोले।

मंगलवार, 28 मार्च

"ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया का उसकी कीमत पर कैसे असर पड़ता है?" इस प्रश्न के बारे में बच्चों को कुछ रोचक तथ्य मिले। थॉमस को पता चला कि मशीनों से वस्तुओं की कीमत काफी कम हो जाती है। उसने बताया कि सन् 1700 में जब कपड़ा बुनने की मशीन काम में ली जाने लगी तो कीमत 50 सेंट प्रति गज़ से 9 सेंट प्रति गज़ हो गई। इस पर सोफिया ने जानना चाहा कि "ये मशीनें आखिर किस तरह ईजाद की गईं?" हमने इस सवाल को अपनी सूची में जोड़ लिया।

शुक्रवार, 31 मार्च

चर्चाओं की वजह से सूचनाओं को कॉपियों में लिखने का काम काफी पिछड़ गया था, सो हमने पिछले तीन दिनों के सामाजिक अध्ययन और अँग्रेज़ी की कक्षाओं का उपयोग एकत्रित सामग्री को व्यवस्थित करने और उसे अपनी कॉपियों में लिखने में किया। हमने शब्दावली की सूची को देखने में भी समय लगाया ताकि हरेक बच्चा सूची में लिखे सभी शब्दों का मतलब समझे। कुछ शब्दों के हिज्जे भी बच्चों ने सीखे।

सोमवार, 3 अप्रैल

बच्चों ने उन कपड़ा मशीनों के बारे में पढ़ा जिनके कारण ऊनी वस्त्र इतना सस्ता हो गया था, और यह भी कि उनका आविष्कार कैसे हुआ। उन्होंने स्पिनिंग जैनी (spinning jenny) नाम की कताई मशीन, आर्कराइट द्वारा बनाई कताई मशीन और कार्टराइट की बुनाई मशीन के बारे में पढ़ा। मैं सबके पास जाकर मदद कर रही थी कि वे एक-एक कर सवाल पूछने लगे। ये सारी मशीनें इंग्लैण्ड में ही क्यों बनीं? लोग इन आविष्कारों से इतनी घृणा क्यों करते थे? आर्कराइट को "औद्योगिक युग का जनक" क्यों कहा जाता था? उन दिनों के कारखाने कैसे होते थे? उन आरम्भिक कारखानों में औरतें और बच्चे क्यों काम करते थे? आज भी कारखानों की स्थिति क्या ऐसी ही है? ये सभी सवाल हमने अपनी सूची में जोड़ लिए।

बुधवार, 5 अप्रैल

कल भी हम आगे पढ़ते और अध्ययन करते रहे। हमें सामग्री तो खूब मिल रही

है, पर इसमें से ज़्यादातर ऐसी है जिसे बच्चे समझ नहीं पा रहे हैं। मैंने उनकी मदद की ताकि वे केवल उन सामग्रियों का ही उपयोग करें जिसे समझने की क्षमता उनमें हो और जिस पर वे अपने शब्दों में बातचीत कर सकें। आज हमने अपने सवालों के जवाब ढूँढने की कोशिश प्रारम्भ की। हेनरी, विलियम और एल्बर्ट ने कताई मशीन तथा आर्कराइट व कार्टराइट के आविष्कारों की कहानियाँ सुनाईं।

मे ने समूह को बताया कि इंग्लैण्ड में व्यवस्था बन चुकी थी, इसलिए इन आविष्कारों का वहीं होना स्वाभाविक था। इंग्लैण्ड में लोगों के समूह कताई और बुनाई के लिए संगठित हो चुके थे। वहाँ श्रम विभाजन था। हमने विस्तार से श्रम विभाजन के फायदे और नुकसानों की बात की और मैंने पाया कि बच्चे इस बात को सच में समझ रहे थे। क्रिसमस के समय हमने ब्लैक फॉरेस्ट के घड़ीसाज़ के बारे में पढ़ा था। डॉरिस ने आज टिप्पणी की, "आज के बड़े घड़ी कारखानों में काम करने वाले को उतना सन्तोष नहीं मिलता जितना ब्लैक फॉरेस्ट के उस घड़ीसाज़ को मिलता था।" "नहीं," वॉरेन ने सोचते हुए कहा, "पर मुझे लगता है कि एक विशाल कारखाने का हिस्सा बनना भी उत्तेजक होता होगा।" थॉमस बोला, "मैं एक कपड़ा मिल देखने जाना चाहूँगा। मैं एक बहुत बड़ी बुनाई मशीन देखना चाहता हूँ। वे बड़ी तेज़ी से काम करती होंगी।"

अँग्रेज़ी के पीरियड में थॉमस ने पासाइक चेम्बर ऑफ कॉमर्स (Passaic Chamber of Commerce) को पत्र लिखकर कपड़ा मिल का भ्रमण करने के बारे में पूछा।

गुरुवार, 6 अप्रैल

मार्था ने समूह को बताया कि लोग कपड़ा बुनने वाली मशीनों को इसलिए तोड़ देते थे क्योंकि उन्हें डर था कि उनके काम छिन जाएँगे। उत्पादकों को भी ये आविष्कार पसन्द नहीं आए क्योंकि इसका मतलब था कि उन्हें नई मशीनों की खरीदी करने पर और अपने कारखानों को आधुनिक बनाने पर बाध्य होना पड़ेगा। "आधुनिक मशीनों का आविष्कार आज भी बेरोज़गारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, कि नहीं?" रूथ ने जानना चाहा। "क्या हमारे कस्बे के कई लोगों को कस्बा छोड़कर जाना नहीं पड़ा था, क्योंकि फसल काटने, अनाज निकालने और पूले बाँधने की मशीनों का आविष्कार होने से पश्चिम में अनाज की फसल लेना अधिक लाभदायक बन गया था?" वॉरेन ने अगली कड़ी

जोड़ते हुए कहा, "और क्या रेलगाड़ी आने का भी इससे रिश्ता नहीं था?" "हमने कुछ ही समय पहले *करेन्ट इवेन्ट्स* में पढ़ा था कि दक्षिण के लोग कपास चुनने वाली मशीनों का विरोध कर रहे हैं क्योंकि इससे लाखों लोग बेरोज़गार हो जाएँगे," थॉमस ने हमें याद दिलाया। हमारे प्रयास से बच्चों को वह दुनिया समझ आने लगी है जिसमें वे जी रहे हैं!

मेरी ने प्रारम्भिक कारखानों के बारे में बताया। उसने कहा कि आर्कराइट ने अच्छे कारखाने लगाए, जिनमें स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानियाँ और बेहतर कार्य स्थितियाँ थीं। उस समय के लिए वे उचित थीं। पर बाद में कारखानों में बच्चों को लगाया जाने लगा क्योंकि मिल मालिकों को यह पता चला कि बच्चे भी इन मशीनों को चला सकते हैं और उन्हें नहीं के बराबर मज़दूरी देनी पड़ती है। औरतों और बच्चों को पुरुषों से कम मज़दूरी देनी पड़ती थी। काम के अधिक घण्टे, कम मज़दूरी और अस्वास्थ्यकर कार्य स्थितियाँ इन कारखानों की विशेषताएँ बन गईं। इनसे बने कपड़े घरों में बने कपड़ों की तुलना में काफी सस्ते थे। कारखानों में मशीनों के कारण उत्पादन बढ़ गया और इससे भी कपड़े की कीमतों में गिरावट आई।

मंगलवार, 11 अप्रैल

हम इस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं कि "क्या ये स्थितियाँ आज भी मौजूद हैं?" पर्ल अखबारों में छपी कुछ तस्वीरें लाई जिनमें कारखानों में काम करने के कारण विकलांग हुए बच्चे और दक्षिण में कपास चुनते बच्चे दर्शाए गए थे। समूह उन समस्याओं में बड़ी रुचि रखता है जो कारखानों के कारण मज़दूरों को झेलनी पड़ रही हैं। हमने उन कानूनों को पढ़ा जो महिला और पुरुष कामगारों की स्थितियाँ सुधारने और बाल श्रम समाप्त करने के लिए बनाए गए हैं, और उन प्रयासों के बारे में जो इस दिशा में किए गए हैं। हमने यह चर्चा भी की कि न्यू जर्सी राज्य बाल श्रम के बारे में क्या कर रहा है। हमने उपभोक्ता सहकारी समितियों, महिला संघों व ऐसी ही दूसरी संस्थाओं पर चर्चा की जो उन स्थितियों को सुधारने के प्रयास कर रही हैं जिनमें उत्पादन होता है। वॉरेन कुछ उपभोक्ता पत्रिकाएँ लाया और आज दोपहर सोफिया ने हमारा परिचय एक रेडियो प्रसारण "उपभोक्ता क्विज़" से करवाया जो उसने खोज निकाला था। हमारी शाला में इसी महीने बिजली आई है और जो पहला काम हमने किया वह था एक छोटे

रेडियो की खरीददारी।

जब हम बाल श्रम पर बातचीत कर रहे थे, मे ने एक पुरानी किताब से पढ़कर सुनाया कि एक बाल श्रम कानून संविधान का बीसवाँ संशोधन बनना था। उसने कहा कि वह अब बीसवाँ संशोधन बन गया होगा। रूथ ने संविधान संशोधनों को देखा तो पाया कि बीसवें संशोधन का बाल श्रम से कोई लेना-देना ही नहीं था। वह संशोधन पारित ही नहीं हुआ था।

थॉमस ने आज हमें बताया कि सामग्री और कपड़ों की कीमतों में कुछ वृद्धि इसलिए भी होती है क्योंकि अब कपड़ा मिलों के मज़दूरों को कुछ बेहतर भुगतान होता है और शोषण करने वाले कारखाने कम हो गए हैं। मैंने बच्चों को बताया कि लेबलों पर ध्यान देकर हम मज़दूरों की बेहतर कार्य स्थितियों के मुद्दे में मदद करते हैं और बदले में हमें बेहतर उत्पाद भी मिलते हैं।

बुधवार, 12 अप्रैल

4-एच सिलाई क्लब की बड़ी लड़कियाँ कपड़ों की देखभाल का अध्ययन कर रही हैं। पिछली बैठक में हमने सर्दियों के कपड़ों को सहेजकर रखने पर विचार शुरू किया था। मुझे लगा कि हमारे काम का यह हिस्सा तो पूरे स्कूल में किया जाना चाहिए। आज हमने इस पर बातचीत की और मैंने सुझाया कि अच्छा हो अगर हम स्वैटर को धोना सीखें यानी ऐसी ऊन को जिसे गीला किया जा सकता है; और जैकेट की सफाई करना सीखें यानी ऐसी ऊन की सफाई जो धोने से खराब हो जाती है। "हम ऊन के बारे में क्या जानते हैं जिससे हमें ऊनी कपड़ों की सफाई में मदद मिले?" मैंने पूछा। बच्चों ने ऊन की विशेषताएँ बताईं, जिन्हें मैंने बोर्ड पर लिख डाला। हमने माइक्रोस्कोप के नीचे देखा था कि ऊन के तन्तु एक-दूसरे से गुँथे होते हैं और उनमें से बाहर की ओर रेशे-से निकले होते हैं। अगर सावधानी न बरती जाए तो धुलने पर तन्तु सिकुड़ते हैं और आपस में गड्ड-मड्ड चटाई जैसे बन जाते हैं। ऊन सूत से कमज़ोर होती है। गरम पानी से धोने और रगड़ने पर ऊनी धागे कमज़ोर पड़ टूट जाते हैं। ऊन को रँगना आसान होता है। अगर वह बदरंग हो जाए तो उसे फिर से रँगा जा सकता है। गर्मी और तापमान में अचानक बदलाव का ऊन पर असर पड़ता है। ऊन गर्मी का अच्छा चालक नहीं होती, इसलिए वह सर्दियों में बड़ी मूल्यवान होती है। गर्मियों के लिए यह सही नहीं रहती क्योंकि इसमें पसीने और शरीर की गन्ध

बस जाती है। सर्दियों में भी ऊनी फ्रॉकों में अस्तर लगाना सही रहता है। ऊन काफी नमी सोखती है, इससे उसे सूखने में ज़्यादा समय लगता है। बच्चों ने ये सभी बातें अपने अनुभवों के आधार पर बताईं, रटकर या पढ़कर नहीं। बच्चों ने ऊन की इन विशेषताओं को अपनी कॉपियों में दर्ज कर लिया। डॉरिस को लगा कि हमें दूसरे कपड़ों की विशेषताओं को भी अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेना चाहिए।

गुरुवार, 13 अप्रैल

मेरी ने न्यू ब्रुन्सविक में स्थित न्यू जर्सी कृषि महाविद्यालय की कृषि विस्तार सेवा की "कपड़ों की देखभाल" शीर्षक वाली पुस्तिका में छपे निर्देशों के हिसाब से अपना स्वैटर धोया। उसने हल्के साबुन का घोल बनाने का प्रदर्शन किया, स्वैटर कैसे धोया और सुखाया जाए यह भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को अपनी कॉपियों में दर्ज कर लिया।

शुक्रवार, 14 अप्रैल

मैंने "कपड़ों की देखभाल" में दिए गए निर्देशों के हिसाब से घोल बनाया और विलियम की जैकेट साफ की। मैंने ऊनी कपड़ों पर इस्त्री करना भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को भी दर्ज कर लिया। डॉरिस और मे ने बचे हुए घोल को घर ले जाने की अनुमति माँगी, ताकि वे अपने कुछ ऊनी कपड़े धो सकें। आज यह जवाब आया है कि बच्चों को पासाइक स्थित कारखानों में जाने की अनुमति नहीं है।

रविवार, 22 अप्रैल

पिछले सप्ताह हमने कपड़ों के अध्ययन को छोड़ा और गुरुवार तथा कल रात को हुए कठपुतली प्रदर्शन की तैयारी में जुट गए। वही प्रदर्शन आज रात फिर से होना है। पूरे साल लोग पूछते रहे हैं कि हम इस साल भी कठपुतली प्रदर्शन करेंगे या नहीं। हमने समय रहते प्रदर्शन का खूब प्रचार-प्रसार किया ताकि वे सब लोग आ सकें जो उसे देखना चाहते थे। गुरुवार रात हमारी नन्ही शाला में इतने लोग आ गए कि कई पुरुषों को जिन्होंने टिकट के पैसे भी दिए थे बाहर खड़े हो खिड़कियों से झाँककर नाटक देखना पड़ा। दरअसल हमने उन्हें कहा था कि वे बाद की दोनों में से किसी एक रात नाटक देख सकते हैं। लोग पन्द्रह

मील दूर स्थित दूसरी काउंटी से, बाइस मील दूर स्थित काउंटी मुख्यालय से, पैनसिल्वेनिया और न्यू यॉर्क तक से आए थे। आज नेवार्क से एक समूह आने वाला है।

बच्चे बेहद खुश हैं, पर उन्होंने आपा नहीं खोया है। नाटक के बाद बच्चों ने मेहमानों से उन लोगों की तरह बात की जिन्हें यह भरोसा हो कि उन्होंने अपना काम बखूबी किया है। उन्होंने जो नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं वे *निकोडेमस, फार्डिनेंड, द चाईनीज़ नाइटिंगेल* (चीनी बुलबुल) और *विनी द पूह* की कहानियों का नाट्य रूपान्तर थीं। ये मौलिक प्रस्तुतियाँ थीं। बच्चों ने हर बार कुछ परिवर्तन किया और अपनी प्रस्तुतियों में कुछ नया जोड़ा।

इन नाटकों ने इन शर्मीले बच्चों के लिए जो किया वह हमारी किसी भी दूसरी गतिविधि की तुलना में कहीं अधिक है। उनकी विवेकशीलता और चतुर प्रबन्धन में भारी इज़ाफा हुआ है। नाटकों के दौरान सभागार के पिछले हिस्से में बैठ मैं न केवल उनकी प्रस्तुतियों का आनन्द ले पाई हूँ, बल्कि दर्शकों कि प्रतिक्रियाओं का मज़ा भी ले सकी हूँ। मैं समझ रही हूँ कि इस माध्यम में कितनी सम्भावनाएँ हैं। बच्चे पर्दे के पीछे चुपचाप व्यवस्थित रूप से अपना-अपना काम करते हैं। उनका आपसी सहकार इतना सघन है कि ज़रूरत पड़ने पर वे किसी दूसरे साथी का काम भी पूरी सहजता से कर सकते हैं। यहाँ सामाजिक नियंत्रण पूरे समूह में निहित होता है जो एक ऐसे साझे काम में जुटा होता है जिसमें सबको योगदान का मौका मिले और जिसके प्रति सबमें ज़िम्मेदारी की भावना हो।

ऐसे सहकार का विकास महज़ इत्तफाक नहीं है बल्कि सचेत योजना का नतीजा है। मैंने ऐसी परिस्थतियाँ बनाने की कोशिश की है जहाँ बच्चे किसी एक नेता का अन्धानुकरण नहीं करते बल्कि सामने आ रही समस्याओं को सुलझाने में विवेक का उपयोग करते हैं। उन्हें योजना बनाने के, फैसले करने के, अपने निर्णयों के मूल्यांकन के अवसर लगातार मिलते रहे हैं। इससे हर नए मूल्यांकन के आधार पर पहले से ज़्यादा चतुराई से काम कर पाने की उनकी शक्ति में इज़ाफा हुआ है। यही तो लोकतंत्र की नींव है!

बच्चों ने विभिन्न नाटकों के बीच वे गाने भी प्रस्तुत किए जो उन्होंने क्रिसमस के बाद सीखे हैं। वे इतना सुन्दर गाते हैं कि डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उन्हें इतवार को अकादमी के चर्च में लड़कों के लिए गाने को निमंत्रित किया। हमने वहाँ

जो कार्यक्रम किया उसमें निम्नलिखित गीत शामिल थेः

महान संगीतकारों की रचनाएँः

बाख – एक स्तुति गीत

बीथोवन – साँग ऑफ डे (दिवस गीत)

हेडन – इकोज़ (प्रतिध्वनियाँ)

मोत्ज़ार्ट – स्प्रिंग इज़ कमिंग (आ रहा है बसन्त)

मोत्ज़ार्ट – इन टायरोलियन हिल्स (टायरोलियन पहाड़ियों पर)

लोकगीतः

दक्षिणी अपलेचियन – द फ्रॉग वेन्ट अकोर्टिंग (मेंढक चला प्रेम करने)

अँग्रेज़ी – फ्रॉग इन द वैल (कुएँ का मेंढक)

अँग्रेज़ी – द लिटिल ओल्ड वुमन (नन्ही वृद्धा)

आयरिश – द मेडो (बाग)

रूसी – फायरफ्लाइज़् (जुगनू)

रूसी – कैनोइंग (नौका-चालन)

फिनिश – डस्क (गोधूलि वेला)

इतालवी – स्ट्रीट फेयर (गली मेला)

हंगारी – कैरावे एंड चीज़ (कलौंजी और पनीर)

डच – इन द पॉपलर्स (चिनार के जंगल में)

डच – द सिंगिंग बर्ड (गाती चिड़िया)

स्लोवाकियन – मॉर्निंग कम्स् अर्ली (जल्द आता है प्रभात)

लोहे के दुकानदार श्री एलेन, जिनसे हमने पिछले बसन्त वार्निश रंग खरीदे थे, प्रदर्शन के बाद मुझसे मिले और बोले, "आपको पता है मिस वेबर, मैं यहाँ सारी मेज़ों को देखता रहा हूँ, और मुझे उन पर एक भी निशान नहीं मिला है! यह आपने कैसे किया?"

वस्त्र उद्योग के अध्ययन के इस हिस्से ने बच्चों के लिए क्या किया इसका मूल्यांकन करने का समय आ चुका है। उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ आवश्यकताएँ इससे पूरी हुई हैं। उन्होंने अपने कपड़ों को ब्रश से झाड़ना सीखा है। कल रात

नाटक देखने आई श्रीमती सामेटिस ने मुझे बताया कि जब से मैंने विलियम की जैकेट स्कूल में साफ की, तब से वह उसे हर दिन झाड़ता और सावधानी से टाँगता है। बच्चों ने बुने हुए ऊनी स्वैटरों को धोना और उन पर लगे दाग-धब्बों को हटाना सीखा है। एण्ड्रयू परिवार की लड़कियाँ अपने ऊनी कपड़ों को सन्दूक में रखने से पहले साफ कर रही हैं। सभी लड़कियाँ अपनी ड्रेसों को टाँगने से पहले ढँकती हैं और सूती फ्रॉकों को पहले से ज़्यादा बार धो रही हैं।

अध्ययन उनकी कुछ आर्थिक ज़रूरतों की भी पूर्ति कर रहा है। उन्होंने यह सीखा है कि ऊनी कपड़ों को अधिक समय तक चलाने के लिए उनकी देख-रेख कैसे की जाए। उन्होंने कपड़ों में अन्तर करना सीख लिया है। इससे वे उनकी उचित देखभाल कर सकेंगे। वे कपड़ों की खरीददारी सोच-समझकर करना सीख रहे हैं। अध्ययन से उनकी सामाजिक ज़रूरतें भी पूरी हो रही हैं। कपड़ों की खरीद में उपभोक्ता जिन समस्याओं का सामना करते हैं उनको वे पहले से ज़्यादा समझने लगे हैं। सिलाई क्लब की लड़कियाँ कपड़ों के विवरण पर खास ध्यान देने लगी हैं। वे उनकी बुनाई व धागों की संख्या और धागे के ताव आदि पर विचार करती हैं। बच्चे लेबलों को ध्यान से पढ़ते हैं। इससे उन्हें कपड़े की गुणवत्ता और उन स्थितियों के बारे में पता चलता है जिनके तहत वह बनाया गया था। वे अब कुछ-कुछ यह भी समझने लगे हैं कि कपड़ा बनाने के लिए क्या-क्या किया जाता है, और कि कपड़ा तथा वस्त्र उद्योग के लिए जो आविष्कार हुए हैं उनका दुनिया पर क्या असर पड़ा है व उनके साथ कौन सी नई समस्याएँ उपजी हैं। कुछ बच्चों को अपने कपड़ों को चुनने में अपने अर्जित ज्ञान को इस्तेमाल करने के अवसर भी मिले हैं। अधिकांश बड़े बच्चे अपने वस्त्र खुद ही चुनते हैं। विलियम और हेनरी ने तो इस विषय में अपने माता-पिता की रुचि भी जगा दी है।

यह अध्ययन कुछ दूसरी ज़रूरतों की आपूर्ति भी कर रहा है। किशोरियाँ इससे प्रेरित हो कपड़ों की देखभाल में रुचि लेने लगी हैं। उन्होंने 4-एच क्लब बुलेटिन का उपयोग न सिर्फ कपड़ों की देखभाल के लिए करना शुरू किया है बल्कि वे बालों और नाखूनों की देखभाल में भी रुचि लेने लगी हैं। वे साफ-सफाई के प्रति सचेत हुई हैं। बड़े लड़कों को हाथों से काम करने के तथा नए प्रयोग करने के अवसर मिले हैं। सभी बच्चों को चर्चा करने की कुछ अच्छी आदतें सीखने

और उनका अभ्यास करने के मौके मिले हैं। वे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चुनना और चर्चा के दौरान समूह के समक्ष उन्हें प्रस्तुत करना सीख चुके हैं। वे अब इसलिए प्रश्न करते हैं क्योंकि कुछ बातें जानने में उनकी रुचि है, और इसलिए भी क्योंकि वे जो कुछ कर रहे हैं वह उन्हें सार्थक लगता है। अखबारों व रेडियो का विवेकपूर्ण उपयोग करना भी वे सीख रहे हैं।

अगले चरण क्या हों? सूती वस्त्रों के अध्ययन में कई सम्भावनाएँ नज़र आती हैं। इससे बच्चों की ज़रूरतें पूरी होंगी और वे कुछ सामान्यीकरणों तक पहुँच सकेंगे। इन सामान्यीकरणों में, जो बच्चों को कर लेने चाहिए, कुछ निम्नलिखित हैं: वस्त्र निर्माण के तरीके उसकी कीमत पर असर डालते हैं। कच्चे माल के लिए देश एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। मशीनों के आविष्कार से व बिजली के आने से काम करने और जीने के तौर-तरीकों में भारी बदलाव आए हैं। देश आपसी व्यापार इसलिए करते हैं क्योंकि अन्य देशों के पास उनकी ज़रूरत की वस्तुएँ होती हैं। बच्चे इन सामान्यीकरणों की दिशा में बढ़ रहे हैं, इसके कुछ संकेत नज़र आने लगे हैं।

मंगलवार, 25 अप्रैल

मेरी एक सखी ने मुझे फोटो चित्रों की एक किताब दी। शीर्षक था, *यू हैव सीन देयर फेसेस* (उनके चेहरों को आपने देखा है)। पुस्तक दक्षिण की समस्याओं को ऐसी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करती है कि मैंने उसे समूह को दिखाने की बात सोची। मुझे विश्वास था कि उन चित्रों को देख बच्चे प्रश्न भी पूछेंगे क्योंकि पुस्तक विचारोत्तेजक है।

चित्रों और उनके नीचे लिखी इबारतों का अध्ययन करने में हमें दो दिन लगे हैं। ये इबारतें दरअसल लोगों के ही कथन थे जो उन्होंने फोटोग्राफर से कहे थे। कहने वाले लोग किसान, नीग्रो और दूसरे लोग थे। उदाहरण के लिए, उनके कुछ कथन थे: "मैंने हमेशा खूब मेहनत की, पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। मैं वहीं का वहीं रहा।" और "नीलामी करने वाला बॉस इतनी तेज़ी से बोलता है कि नीग्रो के पल्ले यह बात पड़ती ही नहीं कि उसकी तम्बाकू की फसल कितने में बिक रही है।" किताब को देखते-पढ़ते समय बच्चों ने ये सवाल पूछे: दक्षिण के किसान इतनी गरीबी में क्यों रहते हैं? क्या ऐसे रहना उनके लिए ज़रूरी है? वे इस बारे में कुछ करते क्यों नहीं? वे किसान और ज़्यादा कमा

क्यों नहीं पाते? उठते ही उत्तर पाने के लिए ये सवाल बेहद बड़े थे। मैंने इन सवालों को उनके बीच खुला रखने की यह कहकर कोशिश की, "हमें पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए।" और मैंने सुझाया कि हम सारे सवाल लिख डालते हैं ताकि हम उन्हें भूल न जाएँ। हेलेन ने सचिव की भूमिका निभाई। बच्चों ने काफी समय अकेले या छोटे समूहों में पुस्तक को देखने और उस पर चर्चा करने में बिताया।

गुरुवार, 27 अप्रैल

कल का दिन समूह ने दक्षिण के बारे में और जानकारी इकट्ठा करने के लिए पढ़ने में बिताया ताकि हमारे सवालों के जवाब ढूँढे जा सकें। आज मार्था ने यह कहकर चर्चा शुरू की, "मैं बता सकती हूँ कि कपास कैसे उगाई जाती है।" मेरी ने कहा कि जब एली व्हिटनी ने कपास पिंजाई की मशीन ईजाद कर दी तो अधिक कपास उगाना सम्भव हुआ। एली व्हिटनी कौन था? इस मशीन ने आखिर ऐसा क्या किया? इतनी कपास क्यों उगाई जाती है? ये वो सवाल थे जो मेरी की टिप्पणी के बाद उठे और उन्हें हमारी सूची में जोड़ लिया गया। एण्ड्रयू ने कहा कि वह अपने नक्शे पर कपास उपज के स्थानों पर निशान लगाने को तैयार है। कुछ बच्चे इस उद्देश्य से पढ़ने लगे, जबकि दूसरे उठाए गए सवालों के जवाब तलाशने के लिए पढ़ते रहे।

बुधवार, 3 मई

आज हमने अपनी चर्चा ठीक उसी जगह से शुरू की जहाँ गुरुवार को रोकी थी। थॉमस ने बताया कि कपास की पिंजाई और सफाई की मशीन का आविष्कार कैसे हुआ। ढेरों लोग हाथ से जितनी कपास एक दिन में साफ करते थे, उतनी कपास एक मशीन से आसानी से साफ हो जाती थी। क्योंकि कपास को साफ करना आसान हो गया, इसलिए दक्षिण के किसान और अधिक कपास उगाने लगे। कपास की फसल बढ़ी तो उसे चुगने के लिए अधिक लोगों की ज़रूरत पड़ी। कपास सस्ती थी और मज़दूरों की संख्या अधिक थी। शायद इसीलिए वे मज़दूरी की दरें कम दे पाते थे। इस पर मैंने थॉमस से पूछा कि "वे" से उसका क्या मतलब था। वह बोला, "जो लोग अपनी ज़मीन बँटाई पर देते थे या बँटाईदारों को ज़मीन और औज़ार देते थे।" इसके बाद सस्ते मज़दूरों, नीग्रो मज़दूरों और खेत मालिकों के फायदे के लिए काम करने की उनकी बाध्यता

पर लम्बी चर्चा छिड़ गई। बच्चों को यह भी समझ आने लगा कि कैसे एक मशीन के कारण, जिसने लोगों को हाड़तोड़ मेहनत से बचाया, कई नई समस्याएँ पैदा हुईं। कपास चुनने की मशीन और उससे जुड़ी समस्याओं पर वे पहले ही बातचीत कर चुके थे। आज उन्होंने फिर से उस पर चर्चा की और उन्हें एहसास हुआ कि समस्या का समाधान आसान नहीं है।

गुरुवार, 4 मई

मेरी ने आज एक कथन पढ़कर सुनाया कि पौधा खाने वाले झींगुर दरअसल आशीर्वाद हैं। हमारे नए लड़के डेनियल ने इस वक्तव्य को चुनौती दी, "कोई कीट आशीर्वाद कैसे हो सकता है?" "क्योंकि उनके कारण कुछ किसानों ने कपास उगाना बन्द कर दिया," मेरी ने जवाब दिया। मैंने पूछा, "तो क्या यह अच्छी बात है?" "हाँ," कई बच्चों ने कहा। "अगर कपास न हो तो कीट मर जाते हैं क्योंकि उन्हें खाने को कुछ नहीं मिलता। इससे ज़मीन को आराम करने का मौका मिल जाता है। ज़मीन कम उपजाऊ है क्योंकि उस पर लम्बे समय से कपास उगाई गई है। इससे अतिरिक्त उपज में भी कमी आती है।" मेरे "क्यों" के ये जवाब बच्चों ने दिए थे। मैंने पूछा, "क्या कोई दूसरे कारण भी हो सकते हैं?" उत्तर की तलाश में हमने किताबें टटोलीं। हमने पाया कि उस कीट के कारण बेहतरी की दिशा में कुछ बदलाव ज़रूर आए, पर वे बदलाव छोटे थे और दूरगामी नहीं थे।

सोमवार, 15 मई

दक्षिण के लोग कपास की खेती कैसे करते हैं, कैसे फसल उगाते हैं, कपास की सफाई से लेकर बाज़ार में उसकी बिक्री और तैयार वस्त्र बनने तक की समूची प्रक्रिया किन चरणों से गुज़रती है, इस सब के बारे में बच्चे पढ़ते और सोचते रहे हैं। उन्होंने इन विषयों पर अपनी कॉपियों में छोटे-छोटे लेख लिखे हैं।

आज जब बच्चे अपने लेख लिखने में व्यस्त थे तो एडवर्ड ने कहा, "सूती कपड़े हमारे पास पहुँचें, उससे पहले कपास के साथ कितना कुछ घट चुका होता है।"

मंगलवार, 16 मई

मैंने समूह को एडवर्ड की टिप्पणी की याद दिलाई और पूछा कि क्या इसका

रिश्ता उन समस्याओं के साथ भी है जो हमने शुरुआत में उठाई थीं। इस पर अच्छी चर्चा हुई। कपास कई लोगों के हाथों से गुज़रती है और हरेक व्यक्ति जो उसके साथ कुछ काम करता है, उससे कुछ न कुछ कमाना चाहता है। जिस व्यक्ति के पास पहले से ही पैसा होता है, वही सबसे ज़्यादा पैसा कमाता है, जबकि बँटाई-किसान को, जिसने कोई पूँजी नहीं लगाई होती और जिसे समूची प्रक्रिया से अनभिज्ञ रखा जाता है, कमाने का कोई मौका ही नहीं मिलता। उत्पादक हमेशा भारी मुनाफा कमाना चाहते हैं, फिर चाहे वह कमाई किसी भी तरीके से हो। शिक्षा का अभाव लोगों को अनभिज्ञ बनाए रखता है। बच्चों ने कहा कि दक्षिण में श्रम की समस्याएँ ठीक वैसी ही हैं जैसी उत्तर में। पर शायद उत्तर के कारखानों में इन समस्याओं को सुलझाने की दिशा में अधिक ध्यान दिया गया है। उन्होंने ऊन के अध्ययन के समय जो जानकारी जुटाई थी उसका उपयोग किया। बच्चों का कहना था कि उत्पादन की ृंखला में जो सबसे पहले होता है वही सबसे अधिक परेशानियाँ झेलता है। उन्होंने इसकी तुलना हमारे क्षेत्र के दूध उत्पादकों से की जिनके बारे में उन्होंने पिछले साल अध्ययन किया था। इस बात पर चर्चा के दौरान कि कपास उगाने वाले किसान को कितनी कम कीमत मिलती है, वॉरेन ने कहा, "कपास की कीमत कितनी हो, यह कौन तय करता है? उन्हें यह कैसे मालूम होती है?" यह जानने के लिए हमने और पढ़ा।

बुधवार, 17 मई

विनिमय केन्द्रों की बात समझना बच्चों के लिए कठिन था। हम जितना समझ पाए उसी को लेकर आगे बढ़े। हमने पाया कि संयुक्त राज्य अमरीका कपास की कीमत तय करने में एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि दुनिया भर में उगने वाली कुल कपास की उपज की आधी यहीं उगती है। इंग्लैण्ड में कपास की जितनी खपत होती है उसकी आधे से भी अधिक संयुक्त राज्य से भेजी जाती है। जर्मनी, इटली और जापान भी संयुक्त राज्य की कपास काम में लेते हैं। लिवरपूल और न्यू यॉर्क में विनिमय केन्द्र हैं जहाँ अनुबन्ध के हिसाब से कपास खरीदी और बेची जाती है। कपास की कीमतें तय करने वाले मौसम और कीड़ों की महामारी पर कड़ी नज़र रखते हैं। मौसम, माँग और आपूर्ति, यातायात की सुविधा, इन सबका कपास की कीमत पर असर पड़ता है। इंग्लैण्ड और जर्मनी

इस कोशिश में लगे हैं कि संयुक्त राज्य से खरीदी जाने वाली कपास में कमी आए। इंग्लैण्ड कपास के साथ प्रयोग कर मिस्र और भारत में बेहतर फसलें पाने की चेष्टा कर रहा है। जर्मनी में कपास के विकल्पों की तलाश में प्रयोग किए जा रहे हैं।

गुरुवार, 18 मई

करेन्ट इवेन्ट्स और *वीकली रीडर* के हालिया अंकों में हमने पढ़ा कि कपास अब "बादशाह" नहीं रही है। यूरोप में अमरीकी कपास की माँग कम हो गई है। रेयॉन अब तेज़ी से कपास की जगह लेने लगा है। बच्चों ने पूछा कि क्या इससे दक्षिण में समस्याएँ बढ़ेंगी और उन समस्याओं को दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं। उन्होंने कपास की अतिरिक्त उपज की चर्चा की, उसकी तुलना दूध के अतिरिक्त उत्पादन से की और दर्शाया कि स्थितियाँ एक जैसी थीं – इन उत्पादों की ज़रूरत के बावजूद अतिरिक्त उत्पादन।

उन्हें यह भी लगा कि खड़ी कपास को हल चलाकर वापिस ज़मीन में मिला देना गलत है, पर उन्हें एहसास था कि यह मुद्दा चर्चा का विषय है। उन्हें लगा कि बेहतर यह हो कि किसानों को सिखाया जाए कि वे विविध प्रकार की फसलें उगाएँ।

शनिवार, 20 मई

अध्ययन का यह चरण कई कारणों से रोचक रहा। यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव के नाम पर हमने केवल चित्र देखे और पढ़ा। बच्चों ने अपने पिछले अनुभवों और अन्य अध्ययनों से जुटाई सामग्री से लगातार सीखें निकालीं। अध्ययन के सभी प्रश्न और दिशाएँ खुद बच्चों ने तय कीं। और, अन्ततः, पहली बार सामान्यीकरण स्पष्ट नज़र आने लगे।

अध्ययन का यह भाग कठिन था। यह समस्या एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या है और यह सभी लोगों की ज़िन्दगियों को छूती है। फिर भी बच्चे इसके सीधे सम्पर्क में नहीं आते और जहाँ तक मुझे लगता है वे इस बारे में कुछ कर भी नहीं सकते। इन कारणों से बच्चों की दृष्टि से इस अध्ययन का मूल्य शायद उतना नहीं है जितना ऊन के अध्ययन का था। इसका सबसे बड़ा फायदा तो यही था कि हम सामान्यीकरणों तक पहुँच सके जिनसे बच्चों को अपनी खुद

की परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी। अध्ययन प्रारम्भ करने से पहले कुछ सामान्यीकरणों को मैंने सूचीबद्ध किया था। वे फिर से उभरे यद्यपि ठीक उस रूप में नहीं जिसमें मैंने उन्हें रखा था। जिन अन्य सामान्यीकरणों तक हम पहुँचे, वे कुछ इस तरह थेः

- किसी भी समुदाय के जीवन और काम में वहाँ की जलवायु बेहद महत्वपूर्ण है।
- किसी एक ही फसल की खेती करने के कुछ नुकसान होते हैं।
- विविध प्रकार की फसलें लेना ज़मीन, उपज और लोगों के लिए फायदेमन्द होता है।
- निर्माताओं, उत्पादकों और मज़दूरों के हित भिन्न होते हैं और अक्सर आपस में टकराते हैं, जिससे समस्याएँ पैदा होती हैं।
- यद्यपि कई चीज़ों का "अति-उत्पादन" होता है, परन्तु वितरण की समस्याओं के कारण इस "अतिरिक्त उत्पादन" का उपयोग वहाँ नहीं हो पाता जहाँ उसकी आवश्यकता हो।

बच्चों द्वारा उठाए गए सवालों और जवाबी सामग्री तलाशने में उत्साह से यह स्पष्ट था कि उनकी इस विषय में गहरी रुचि थी। यह रुचि अधिकतर इसलिए थी कि सामग्री में नाटकीय द्वैत भाव था और मुझे सावधानी बरतनी पड़ी ताकि उनकी चर्चा तथ्यात्मक रहे, भावनात्मक न बन जाए। यह महत्वपूर्ण था कि अध्ययन की ज़िम्मेदारी बच्चों के हाथों में हो ताकि उनकी रुचि सतत बनी रहे, अन्यथा इतना पढ़ना, इतनी बातचीत और विमर्श करना ऊबाऊ और कठिन बन जाता।

बुधवार, 24 मई

पिछले तीन दिन हमने एण्ड्रयू की मदद करने में बिताए और नक्शे पर फ्लैक्स्, रेशम और रेयॉन के स्रोत चिह्नित किए। बेहद सुन्दर नक्शा बन पड़ा है। यह हल्के जल रंगों से चित्र-बोर्ड पर बना है। एण्ड्रयू को उस पर बड़ा नाज़ है। बच्चों ने अपनी कॉपियों में चार्ट बनाकर कपास, लिनेन, रेशम और रेयॉन के तन्तुओं की विशेषताएँ दर्ज कीं।

इस लाभदायी अध्ययन को हमने यहाँ लाकर छोड़ा। यह लाभदायी इस अर्थ में था कि बच्चों की कई ज़रूरतें इससे पूरी हो पाईं, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है। यह लाभदायी इसलिए भी था क्योंकि इसने मुझे सिखाया कि अगर शिक्षा को बच्चों की ज़िन्दगी में कोई बदलाव लाना है, तो पुरानी तकनीकों से काम नहीं चलेगा। हमें नई परिस्थतियों के लिए लगातार नई तकनीकें ईजाद करनी होंगी। गत वर्ष मैंने शैक्षिक प्रक्रिया और पाठ्यचर्या निर्माण के बारे में जो शब्द लिखे थे उन्हें मैं अब अधिक स्पष्टता से समझ पा रही हूँ।

बुधवार, 31 मई

इन सर्दियों में विज्ञान शिक्षण के एक सत्र के दौरान मुझे पता चला कि हिल बच्चों के अलावा शेष बच्चों ने कभी समुद्र देखा ही नहीं है। मुझे लगा कि समुद्र तट की यात्रा बच्चों के लिए एक सार्थक अनुभव रहेगा। मैं इस बात का ज़िक्र अपनी मित्र श्रीमती कोलमार से कर रही थी, जो हमारी नन्ही-सी शाला में रुचि लेती रही हैं। उन्होंने कहा, "तो फिर तुम उन्हें हमारे घर क्यों नहीं ले जातीं?" उनका घर ऐन समुद्र तट पर है, जो नितान्त निजी तट है।

यही कारण था कि मैं स्कूल के बाद आज शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से मिलने गई, उन्हें यह समझाने कि इस भ्रमण का बच्चों के लिए क्या मतलब होगा, और यह अनुमति लेने कि क्या हम इसके लिए दो दिन काम में ले सकते हैं, क्योंकि बच्चों को कुछ गाड़ियों में भरकर ले जाने और वापिस लाने का काम बसन्त के गर्म सप्ताहान्त के बदले सप्ताह के दौरान करना अधिक सुरक्षित होगा। उनका कहना था कि क्योंकि स्टोनी ग्रोव में हम काफी अतिरिक्त समय लगाते हैं, हम दो दिन की छुट्टी आराम से ले सकते हैं। और, क्योंकि वे यह भी समझते थे कि ऐसे अनुभव से बच्चे खूब सीखेंगे, उन्होंने हमें अनुमति दे दी।

गुरुवार, 1 जून

पहला काम जो बच्चों ने किया वह था भ्रमण में शामिल होने के लिए माता-पिता की लिखित अनुमति पाने के लिए पत्र लिखना। कल रात घर लौटते वक्त मैं न्यू जर्सी की सड़कों के कई नक्शे लेती आई थी ताकि हरेक बच्चे को एक-एक मिल सके, और अब हमने अपने रास्ते का अध्ययन करना शुरू किया। हमने देखा कि भ्रमण का सीधा रास्ता क्या रहेगा और फिर सड़कों के नक्शे के पीछे

दिए गए ऐतिहासिक स्थानों के चित्रों के नक्शे का अध्ययन भी किया ताकि अधिक से अधिक स्थानों पर जाना तय कर सकें।

सोमवार, 5 जून

पिछले सप्ताह हमारा लगभग पूरा समय उन ऐतिहासिक स्थानों के महत्व का अध्ययन करते बीता जहाँ हम भ्रमण के दौरान जाने वाले हैं। बच्चे क्रान्ति के युग और न्यू जर्सी की उस युद्ध में भूमिका के इतिहास में डूबे रहे हैं।

कल ही वह बड़ा दिन है। मुझे नहीं लगता कि बच्चों में से कोई भी आज रात सोएगा। हम केवल बड़े समूह के बच्चों को ले जा रहे हैं क्योंकि इस तरह की यात्रा पर प्राथमिक बच्चों की देखभाल मुश्किल होगी। हमने उनसे वादा किया है कि हम उनके लिए जितनी सम्भव होगी समुद्र किनारे की रेत ले आएँगे।

गुरुवार, 8 जून

यात्रा समाप्त हुई और आज हम सब असामान्य रूप से शान्त हैं। पिछले दो दिनों का हमारे लिए क्या अर्थ रहा है उसे अभिव्यक्त करने के लिए हम में से किसी के पास भी शब्द नहीं हैं। पर जब-जब बच्चों की आँखें एक-दूसरे की या मेरी आँखों से मिलीं, मैंने उनमें आपसी समझ की गर्माहट झलकते देखी।

हम सुबह साढ़े आठ बजे निकले थे और हमारा पहला पड़ाव प्रिंस्टन था जहाँ हमने प्रिंस्टन के अध्यक्ष का बाग, गिरजाघर और नासाऊ हॉल (Nassau Hall) देखा जहाँ क्रान्ति के समय सैनिकों के बैरक थे। हमने प्रिंस्टन के छात्रावास और कक्षाओं वाले भवन भी देखे। यहाँ से हम टैनेन्ट चर्च गए। बच्चों ने वहाँ 250 वर्ष पुराना बलूत का वृक्ष देखा और यह कल्पना करने की कोशिश की कि जब वह एक नन्हा पौधा रहा होगा तो वह स्थान कैसा दिखता होगा। हमने चर्च के पास स्थित मॉली पिचर (Molly Pitcher) के दोनों कुएँ भी देखे। कुछ आगे हम लताओं से घिरे एक भोजनालय में रुके, जहाँ हमने दूध खरीदा और घर से साथ लाए खाने को खाया।

दोपहर तीन बजे हम बारनेगाट (Barnegat) चट्टान-माला के पास से गुज़र रहे थे। समुद्र हमारे बाईं तरफ था और खाड़ी दाहिनी तरफ और बीच में थी मन्द बयार। बच्चे बड़ी मुश्किल से अपने आप को नियंत्रण में रखे हुए थे। तट पर

पहुँचते ही वे समुद्र में तैरने को छटपटाने लगे। श्रीमती कोलमार का एक बेटा, जो समुद्री मछली-सा है, ने हर बार समुद्र में उतरते बच्चों पर नज़र रखी।

स्वादिष्ट रात्रि भोज के बाद कुछ लड़कों ने बरतन साफ करने में मदद की और बाकी आग जलाने की लकड़ियाँ बीनने में जुटे। गोधूलि में बाहर अलाव जलाया गया। कुछ बच्चे रेत में कुश्ती लड़ने लगे तो कुछ रेत के ढेरों के बीच छुपम-छुपाई खेलने भागे। क्रमशः वे आग के चारों ओर आ बैठे और गीत गाने लगे। एल्बर्ट ने पूछा, "क्या हम आज रात जितनी देर चाहें जगे रह सकते हैं?" मेरा जवाब था, "जब तक तुम्हारी इच्छा हो।" "रात बारह बजे तक भी?" "रात बारह बजे तक भी।" "वाह!" सब बच्चे एक आवाज़ में चीखे। पर साढ़े नौ बजे रूथ ने सवाल किया, "क्या बारह बजे तक जगना ज़रूरी है?" हम सब खूब हँसे और सोने को तैयार होने लगे। लड़कों ने तय किया कि वे सुबह जल्दी उठेंगे ताकि मछुआरों की नौकाओं को आते देख सकें।

अगली सुबह साढ़े पाँच बजे मुझे टॉम का कण्ठ सुनाई पड़ा, "ओ वॉरेन, तू उठ गया है?" वॉरेन बोला, "हाँ, तुमने वह आवाज़ सुनी? लगता है मछुआरों की नावें आने लगी हैं। चलो देखने चलते हैं।" मिनट भर भी न हुआ कि मैंने सीढ़ियों पर उनकी पदचाप सुनी। तब दूसरे, तीसरे, चौथे बच्चे को उतरते सुना। छह बजे तक हम सब समुद्र तट पर थे। हमने देखा कि मछुआरे अपनी नावें समुद्र में ले जा रहे थे ताकि अपने जालों को सम्हाल सकें। बच्चे उनके लौटने की राह ताकने लगे और इस बीच उन्होंने ज़िन्दगी में पहली बार तेज़ पानी को रोकने के लिए रेत के किले बनाए। उन्हें रेत में कई केंकड़े दिखे। उन्हें तेज़ी से रेत खोद वापस दबने में जुटे देखने के लिए बच्चों ने उन्हें कई बार खोदकर बाहर निकाला।

लौटने पर मछुआरे मछलियों को छाँटने लगे। बच्चों ने देर तक उन्हें कई "अजीब-अजीब" सी मछलियाँ छाँटते देखा। मछुआरों का रवैया दोस्ताना था, उन्होंने बच्चों से बात की। वॉरेन जब नाश्ता करने लौटा तो बोला, "पता है मिस वेबर? वे बिल्कुल असली मछुआरों की तरह बातचीत करते हैं।" उसे इस बात से मज़ा आ रहा था कि उसने किताबों में जिस तरह के मछुआरों के बारे में पढ़ा था वैसे मछुआरे वास्तव में थे। नाश्ते का समय मौज-मस्ती का रहा। बच्चों ने ठूँस-ठूँसकर खाया। उन्होंने रेडीमेड और घर में बनाई चीज़ों का दूध के साथ

नाश्ता किया। इसके बाद सन्तरे का रस, अण्डा, मांस, टोस्ट और जितना वे पी सकते थे उतना दूध लिया। लॉयड, जो सोमवार को पहली बार हमारे स्कूल आया था, हमारे बीच बिल्कुल सहज था। नाश्ता पूरा होने के बाद उसने छाती फुलाई और अपने पेट को थपथपाते हुए हँसकर बोला, "श्रीमती कोलमार शायद चर्मप्रसाधक हैं, क्योंकि उन्होंने आज ढेरों जानवरों को ठूँसकर भर दिया है।"

बरतन साफ करने की इस बार लड़कियों की बारी थी। क्योंकि मैं बच्चों को कह चुकी थी कि नाश्ते के बाद दो घण्टों से पहले वे समुद्र में तैर नहीं सकते, उन्होंने समय बिताने के दूसरे रास्ते तलाशने शुरू किए। वॉरेन और एण्ड्रयू अपने स्केचपैड ले तट पर गए और दोनों ने दो-दो सुन्दर दृश्य आँके। बाकी लड़के आँगन में "चाइनीज़ चैकर" के बोर्ड के इर्द-गिर्द लोट गए। लड़कियाँ बरतन साफ करने के बाद तट पर लम्बी सैर को निकल गईं। कल सुबह भाटा था, सो बच्चों को तैरने में मज़ा आया।

दिन के एक और भारी-भरकम खाने के बाद श्रीमती कोलमार की माँ श्रीमती अटर ने लड़के-लड़कियों को गृह युद्ध की अपनी स्मृतियाँ सुनाईं और कैलिफोर्निया में आए भूकम्प के अपने अनुभव बताए। श्रीमती अटर बेहतरीन किस्सागो हैं और बच्चे मुग्ध हो उन्हें सुनते रहे।

जिस समय हम श्रीमती कोलमार से विदा ले रहे थे, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने कभी इतने शिष्ट बच्चों का समूह नहीं देखा था। किसी शिक्षक का इससे बड़ा इनाम भला और क्या होगा?

घर लौटते समय हम न्यू ब्रूनस्विक रुके ताकि बच्चे कृषि प्रयोग स्टेशन देख सकें। उसी इलाके में हमने न्यू जर्सी महिला महाविद्यालय और रूटगर्स विश्वविद्यालय के परिसरों को भी गाड़ी में घूमकर देखा। बाउन्ड ब्रुक के फूल बागान देखने को भी हम रुके। शाम सात बजे तक हम घर पहुँचे ही थे कि बरसात शुरू हो गई। पर हमें चिन्ता नहीं थी – हमें गुनगुनी धूप से भरपूर दो दिन मिल चुके थे।

शुक्रवार, 9 जून

आज हम अपनी सामान्य दिनचर्या पर लौट आए और पिछड़े कामों के बोझ तले हमने खुद को दबा पाया। हमें अपने अखबार का तीसरा अंक निकालना था। हमने उसकी ले-आउट को रोक लिया ताकि समुद्र तट की यात्रा सम्बन्धी

आलेखों को भी शामिल कर सकें।

हमें वसन्तोत्सव की योजना भी बनानी थी। सर्दियों में जब भी बाहर खेल पाना असम्भव हो जाता, मैं बच्चों को लोकनृत्य सिखाती रही। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि मौसम गर्माने के बाद भी हमने बाहर नाचना जारी रखा। स्कूल में बिजली आने के कुछ दिनों बाद मार्था एक शाम अपने भाई के साथ युवा मंच की बैठक में आई। जब उसने पोर्च की बत्ती से जगमग खेल मैदान देखा तो उसे एक विचार सूझा, "कितना अच्छा रहे अगर हम बिजली आने का जश्न मना सकें? हम बाहर लोकनृत्य कर सकते हैं और मेरे पास फ्लड लाइटें आदि भी हैं।" यह बात तय हुई, और युवा मंच के सदस्यों ने मदद करने का वादा किया। हमारे अच्छे दोस्तों, ब्रीड दम्पत्ति ने हमें फ्लड लाइटें और लम्बे तार उधार देने का आश्वासन दिया।

आज हमने तय किया कि उत्सव में कौन-कौन से नृत्य शामिल किए जाएँगे। हेनरी को समुदाय में उत्सव का प्रचार-प्रसार करने की समिति का अध्यक्ष चुना गया। यह सामुदायिक उत्सव ही होगा और कोई शुल्क नहीं रहेगा। सोफिया जलपान व्यवस्था समिति में अन्य सदस्यों को खुद चुनेगी। रूथ देखेगी कि कार्यक्रम सुचारू रूप से चले, और उत्सव के अन्त में सामाजिक नृत्य के लिए रेडियो चालू रहे। एडवर्ड और जॉर्ज नैपकिन और कागज़ के कपों को फेंकने के लिए कूड़ेदानों को लगाने का जिम्मा उठाएँगे। डॉरिस और मे ने स्वेच्छा से कहा कि हमारी रसोई से लिए गए बरतनों और रसोईघर की सफाई की ज़िम्मेदारी वे लेंगी।

हमने दिन का काफी समय नृत्यों की समीक्षा करने में बिताया, पहले प्राथमिक बच्चों के साथ और तब बड़े बच्चों के साथ। अब सन्तोषजनक ढंग से कार्यक्रम तय हो गया है।

गुरुवार, 15 जून

सोफिया, रूथ, डॉरिस और मे ने आते ही रसोई की सफाई शुरू कर दी। शेष लोग आसपास कल रात के सफल उत्सव की चर्चा करने लगे। रंगीन रोशनी में नृत्य सच में बड़े अच्छे लगे थे। हमारा कार्यक्रम यह था:

1. यूरोपीय लोक-नृत्य — बड़े बच्चों द्वारा:

बच्चों का पोल्का नृत्य
रोवेनॉका – बोहिमियन नृत्य
सेबोगार – हंगेरियन नृत्य
आओ खुशी मनाएँ – जर्मन नृत्य
पर्वत मार्च – नोर्वेजियन नृत्य
रित्श, रैत्श

2. प्राथमिक समूह के बच्चों के नृत्यः
हम चले शिकार पर
जूते बनाने वालों का नृत्य
ओ मेरा नन्हा कुत्ता कहाँ गया?

3. बड़े बच्चों द्वारा अमरीकी लोक नृत्यः
कैप्टन जिंक्स
पीछे छूट गई जो लड़की
लपक पड़ा लकड़बग्घा
वर्जिनिया रील

4. सामाजिक नृत्य

युवा लड़कों ने जाने से पहले पियानो को बाहर लाने, और कार्यक्रम की समाप्ति पर उसे वापिस अन्दर ले जाने में मदद की। सभी किशोर-किशोरियाँ नाचे और उनके अभिभावकों को अच्छा लगा। बाद में वे तसल्ली से बैठे रहे और आपस में बतियाते रहे। बच्चे उनके बीच शिकंजी और अंगूर के रस के गिलास और घर में बनाए बिस्कुटों की ट्रे घुमाते रहे। कल से छुट्टियाँ शुरू हैं, इसलिए हमने आज स्कूल को गर्मियों के सत्र के लिए तैयार करने से अधिक कुछ नहीं किया।